जगदीश प्रसाद मण्डलक काव्य संसार

डॉ. उमेश मण्डल

जगदीश प्रसाद मण्डलक काव्य संसार (अनुसन्धान विश्लेषण)   डॉ. उमेश मण्डल   पल्लवी प्रकाशन

जगदीश प्रसाद मण्‍डलक काव्‍य संसार

जगदीश प्रसाद मण्डलक काव्य संसार

(अनुसन्धान विश्लेषण)

डॉ. उमेश मण्डल



पल्लवी प्रकाशन

बेरमा/निर्मली

JAGDISH PRASAD MANDALAK KAVYA SANSAR

Research Analysis by Dr. Umesh Mandal

प्रकाशक : पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली
जिला- सुपौल, बिहार : 847452

वेबसाइट : http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल : pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल : 6200635563; 9931654742

प्रिन्ट : मानव आर्ट, निर्मली (सुपौल)
आवरण : श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल) बिहार : 847452
फोण्ट सोर्स : https://fonts.google.com/,
https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts

दाम : 300/- (भा.रू.)

प्रथम संस्करण : 2022

ISBN : 978-93-93135-10-0

अनुक्रम

विषय प्रवेश

भारतमे स्वतंत्रताक झण्डा फहराइक समय आबि गेल छल, अंगरेज अपन डेली-खोंगी बान्हि ऐठामसँ विदा होइपर रहए। तैबीच माने 1947 ई.क 5 जुलाई-केँ, मधुबनी जिलाक झंझारपुर अनुमण्डलक बेरमा गाममे जगदीश प्रसाद मण्डलक जन्म भेलैन। “मिथिलांचलक बीच झंझारपुर इलाका ओ क्षेत्र छी, जइमे मिथिलाक इतिहास-दर्शन, अखनो झलैक रहल अछि। अखनो पाथरमे फूल, माटि-पानिमे सुगन्ध जीवित अछि। क्षेत्रक गाम-समाजमे दर्जनो जाति, दर्जनो सम्प्रदाय अदौसँ अखन धरि मिलि-जुलि एकठाम बास करैत एला अछि। भूमियोक शक्ति ओहने उर्वर अछि, देशक एक नम्बर श्रेणीक सघन आबादीबला क्षेत्र अछि।..मिथिलांचलक बीच झंझारपुर इलाकाक अप्पन प्रतिष्ठा रहल अछि। जहिना शिक्षाक क्षेत्रमे तहिना आर्थिक क्षेत्रमे सेहो। देशक पैमानामे इलाका पछुआएल नै छल, अगुआएल छल। एक-सँ-एक महान पुरुष पैदा लऽ चुकल छैथ। ई आजादीक लड़ाइमे खून बहौनिहार क्षेत्र छी। झंझारपुर अंगरेजक मुख्य अड्डामे छल। दमन नीति केतौ चलल तँ अहू क्षेत्रमे चलल।”[1]

1950 इस्वीमे जगदीश प्रसाद मण्डलजीक पिता–दल्लू मण्डल–क निधन भऽ गेलैन। “पिताक मृत्युक किछुओ नै यादि अछि, सिरिफ गाछीमे जरैत अछिया टा...। जखन तीन बर्खक रही। दू भाँइक भैयारीमे छह बर्खक भैया रहैथ। पिताजी करीब एक मास बीमार रहला। इलाजोक नीक बेवस्था नहि, ताबत दरभंगा अस्पताल नै बनल छेलइ। झाड़-फूकसँ लऽ कऽ जड़ी-बुटीक इलाज समाजमे चलै छल।”[2]

जहिया देश आजाद भेल तइ दिनक समय आ आइक समयमे काफी बदलाउ आबि गेल अछि। बदलाउ नीक-बेजाए दुनू दिस भेल अछि। नीकसँ

---

[1] जगदीश प्रसाद मण्डल- एकटा बायोग्राफी, गजेन्द्र ठाकुर, 2013, पृ.- 08

[2] तत्रैव, पृ.- 09-10

नीक सेहो भेल अछि आ नीकसँ अधला सेहो भेल अछि। तहिना अधला बदैल कऽ नीको भेल अछि आ अधलासँ आरो अधला सेहो भेल अछि। ओइ समयमे संयुक्त परिवारक जे बेवस्था छल, परिवारक प्रति लोकक मनमे जेतेक विश्वास छल, सुदृढ़ता छल तइमे आइ बहुत कमी आबि गेल अछि। स्वभाविक अछि जखन परिवारक प्रति दृढ़ता कमत तँ ओकर असर समाजोपर पड़बे करत। ओइ समय, माने जहिया देश आजाद भेल आ तेकर बादो धरि, मोटा-मोटी छठम-सातम दसक धरि, अपना ऐठामक लोकमे संयुक्त परिवारक प्रति जे सुदृढ़ता छल ओ आजुक लोकमे, आजुक परिवारमे बदैल कऽ कमि गेल अछि। आजुक परिवारमे ने बेटा बाप-माएकेँ मनसँ देखैत अछि आ ने माए-बाप बेटा-पुतोहुकेँ देखैले तैयार छैथ।

जगदीश प्रसाद मण्डलजी तहिया तीनिये बर्खक रहैथ जहिया हुनक पिताक मृत्यु भेलैन। मुदा लालन-पालनसँ लऽ कऽ पढ़ाइ-लिखाइमे कोनो कमी नहि भेलैन। तेकर कारण मात्र परिवारेटा नहि सामाजिक वातावरण सेहो अछि। मण्डलजी कहै छैथ- “एक तँ अपनो परिवारमे समांग, दोसर गामक कोनो जाति एहेन नहि, जइ जातिसँ पारिवारिक सम्बन्ध नइ छल। तैसंग जातियोक नमहर टोल। गामक चारूकातक गाममे कुटुमैती सेहो छल आ अखनो अछि। ओहो सभ अपनामे समय निर्धारित कऽ अबैत-जाइत रहै छला। कान्ही सेहो नीक बनौलैन। एक-सँ-एक खिस्सकर आ एक-सँ-एक गप केनिहार। तँए दिन-रातिमे कोनो अन्तर नहि। अभाव परिवारमे नहियेँ छल तँए अनुकूल परिस्थिति बनल छल।”[3]

हिन्दी एवं राजनीति शास्त्र विषयसँ जगदीश प्रसाद मण्डलजी एम.ए.क अहर्ता प्राप्त केलाह। ओइ समय परिवारमे दू भाँइ पिसियौत रहै छेलैन। शिक्षा ग्रहण केलाक बाद जीविकोपार्जन हेतु कृषि कार्यकेँ अपनौलैन। ओइ समय समाजक हालत बहुत रद्दी छल। खासकऽ जइ गाम-समाजमे मण्डलजीक जन्म भेल छैन। विकासक खिलाफ समाजमे व्याप्त रूढ़िवादी एवं सामन्ती बेवहार एक-एक बेकतीकेँ जकैड़कऽ पकड़ने छल। स्थिति-परिस्थितिकेँ देखैत जगदीश प्रसाद मण्डलजी समाज सेवामे लागि गेला। “जेतए परिवारमे साधारण

---

[3] *जगदीश प्रसाद मण्डल- एकटा बायोग्राफी, गजेन्द्र ठाकुर, 2013, पृ.- 10*

शिक्षाक आगमन भेल छेलैन। तैठाम एम.ए. तक पढ़लैन। परिवारे नहि, गामेमे पहिल एम.ए. भेला। ओना, पैछला पीढ़ीमे संस्कृतक माध्यमसँ एक-पर-एक विद्वान बेरमामे भेला मुदा जेनरलमे जगदीश प्रसाद मण्डलेटा रहैथ।”[4]

एम.ए. पास मण्डलजी समाजक प्रति अपन दायित्वकेँ बुझि डेग आगू बढ़ौलैन तँ हिनका सामाजिक विकासमे बहुत-किछु वाधक बुझि पड़लैन। बुझियो केना ने पड़ितैन। आइ ने सामाजिक समस्या गौण पड़ि रहल अछि। मुदा ओइ समय से नहि छल। “बीसम शताब्दीक पाँचम दशक, देशकेँ ऐ रूपेँ आन्दोलित कऽ देलक जे जन-गण अपन घर-परिवारसँ आगू बढ़ि देश लेल अपनाकेँ अर्पित कऽ देलक। जहिना दशकक पूर्वार्द्ध आन्दोलन केलक तहिना एकसंग अनेको प्रश्न उठि कऽ ठाढ़ भेल। ओना, आइ धरिक देशक इतिहासमे एकसंग एते खुशी कहियो नै भेल छल जेते भेल। जेना-जेना आजादीक झण्डा फहरबैक दिन लगिचाइत गेल तेना-तेना खुशीमे बढ़ोतरी होइत गेल। अदहा दशक जहिना जगैमे लागल तहिना रंग-रंगक सपना देखैमे सेहो अदहा दशक खुशीसँ बितल। ..समाजक बीच तँ नहि, मुदा देशक राजनीतिकेँ आर्थिक मुद्दा स्पष्ट विभाजित कऽ देने छल। कियो देशक पूर्ण आजादी देखै छला तँ कियो एकरा नेंगरा आजादी बुझै छला। ओना, देशक भीतर रौदी, भुमकम, जाति-साम्प्रदायिक उन्माद एते जोर पकैड़ लेने छल जे भीतर-बाहरक लड़ाइमे राजनीतिक दल ओझराएल रहए।”[5]

बेरमा गाममे सेहो जमीन्दार आ आमजनक बीच विरोधक अनेको मुद्दा उठिकऽ ठाढ़ भेल। सामन्ती बेवहारक खिलाफ पुरजोर लड़ाइ उठल। जगदीश प्रसाद मण्डलजी सेहो समाजक प्रति अपन दायित्व-कर्ममे संलग्न भऽ गेला। लगातार 35 वर्ष धरि केस-मोकदमा, जहल यात्रादिमे हिनकर समय बितलैन। जेकरा हम ओहुना बाजि-बुझि सकै छी जे श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजी अपन जीवनक अधिकांश समय समाज-सेवामे लगेलैन। किएक तँ ओ जेतेक मोकदमा लड़ला, जेतेक बेर जेल गेला से सभटा सामाजिक मुद्दासँ जुड़ल

---

[4] *जगदीश प्रसाद मण्डल- एकटा बायोग्राफी, गजेन्द्र ठाकुर, 2013, पृ.- 125*

[5] *तत्रैव, पृ.- 08-09*

मोकदमादि छल, बेकतीगत नहि। आ से दत्तचित भऽ कऽ लागल रहला, अर्थात् रूचिपूर्वक। मुदा...।

मुदा ई जे वातावरणोक तँ अपन प्रभाव होइत अछि। तेतबे नहि, जहिना वातावरणक प्रभाव मनुक्खपर पड़ैत अछि तहिना मनुक्खोक प्रभाव की वातावरणपर नहि पड़ैत अछि। पड़बे टा नहि करैत अछि वातावरणक निर्माताक रूपमे सेहो प्रकृतिसँ बीस मनुक्खे अछि।

“1960 इस्वीक पछाइत मधुबनी जिला कम्युनिस्ट पार्टीक मुख्य आन्दोलन ‘कोसी नहर’, ‘नूनथर’, ‘शीशा पानी’ आ ‘बराह क्षेत्रक डैम’पर केन्द्रित भऽ गेल। ओना, आनो मुद्दा रहबे करइ। बटाइदारी जमीनक लड़ाइ जोर पकड़नहि रहए। नहरक पानि आ पनिबिजली जेना कम्युनिस्टे पार्टीक होइ तहिना लोकक धारणा बनि गेल छेलइ। जेकर समाधान भेने मिथिलांचलक उद्धार होइत। खेतीसँ उद्योग धरि बढ़ि जाइत, से नै भेल। जेते विरोधी (कम्युनिस्ट विरोधी) ताकत छल रंग-रंगक आन्दोलन, षड्यंत्र कऽ योजनाकेँ अखन धरि सफल नै हुअ देलक। पार्टियोक राजनीतिमे ठहराव आबि गेल। एतबे नहि, जेकरा सभकेँ बटाइ-जमीन भेल ओहो सभ ओकरा (ओइ खेतकेँ) भरना लगा पंजाब-दिल्ली जाए लगल। परिणाम ओहन आबए लगलैन जे की केलाह तँ किछु नहि। सिरिफ जिलेक राजनीति नहि। गामोमे सएह भेलैन।”[6]

“जगदीश प्रसाद मण्डलजीक मनमे उठलैन जे हजारो बर्खक गाछ किछु-ने-किछु अपनामे नवीनता अनिते रहैए। चाहे नव टुसा हउ आकि नव मुड़ी आकि नव पात आकि नव कलश। विचार तँ उठलैन मुदा मनमे दुनू केस तँ रहबे करैन। जाइ-अबैक परेशानी नहि, केसक सजाए केर परेशानी। दुनू सेशन केस। दू-दिना-चारि-दिना तँ छी नहि जे बुझथिन पहुनाइ करए जहल गेल छला। सालक-साल दस साल, बारह साल। दुनू मिला बीस सालसँ बेसी। तैबीच की कएल जाए।”[7] जाधैर केससँ छुटकारा नै पाबि लेता ताधैर दोसर दिस बढ़ब

---

[6] जगदीश प्रसाद मण्डल- एकटा बायोग्राफी, गजेन्द्र ठाकुर, 2013, पृ.- 130

[7] तत्रैव

नीक नै बुझैथ।

"केसक छुटकाराक पछाइत करबे की करितैथ। गुजर लेल खेती करिते छला। नोकरी दिस कहियो मनसँ तकबे ने केलाह, वेपार कएले ने हेतैन। मुदा जिनगियो तँ छोट नहियेँ अछि। कठही साइकिल (काठक पाइडिल लगौल साइकिल) तँ जिनगी छी नहि जे थालो-कादो आकि रस्ताक कटारियोमे कन्हापर उठा लेता आ टपि जेता। जिनगीक गाड़ी छी। एक पटरीपर सँ दोसर पटरीपर आनब। एकर अर्थ ई नहि जे जैठाम पाहि कटैक जोगार छै तैठाम गाड़ीकेँ लऽ जा कऽ दोसर पटरीपर चढ़ा दियौ। दोसर पटरीपर आनैक अर्थ ई जे छोटी लाइन (मीटर गेज लाइन) सँ बड़ी लाइनपर चढ़ेबाक अछि। ओकर आँट-पेट छोट छै मुदा किछु पार्ट- धुरी-चक्का बदलने तँ डिब्बा आ आनो-आनो वस्तु उपयोगी बनि जाइ छइ। प्रश्न एतबे नै अछि, ऐसँ आगूओ अछि। ओ ई अछि जे अदौसँ अबैत ई जिनगीक गाड़ी छी। जेतेक रंगक पटरी तेतेक रंगक पटरीक गति। तैठाम गाड़ीकेँ दोसर पटरीपर लऽ जाएब, असान नहि।

साहित्यो जगतक जे दशा-दिशा अछि ओ छपित नहियेँ अछि। तहूमे लाठी सबहक हाथ पड़ल अछि। कोनो वस्तु मंगलापर नै दऽ छिपा लेब, लाथ कहबैत अछि। मैथिली साहित्य जगत समाजसँ एते दूर हटि गेल अछि जे जोड़ब असान नै अछि। ओना, ई सिरिफ मैथिलीए-मे नहि, आनो-आन साहित्यमे भरपूर अछिए। जेना- कबीर दासक चर्चा मैथिली साहित्यमे कम अछि मुदा कबीर दासक जे जिनगीक (जीवन पद्धति) इतिहास प्रस्तुत कएल गेल अछि ओ विवेकपूर्ण जकाँ नै अछि। विवेकपूर्ण नै हेबाक कारणे कबीर दर्शन समाजसँ हटि गेल अछि। जेहो सभ दर्शनक प्रचार-प्रसार कऽ रहल छैथ, ओहो सभ या तँ अपनो गुमराहे छैथ, नहि तँ लाथी छैथ, जे गुमराह केने छैथ।

तहिना तुलसी दास 'गोस्वामी' कहबै छैथ, मुदा केतेक गाए पोसने छला? जरूरत अछि युगानुसार साहित्यक निर्माण करब। ..तहिना जाधैर मैथिलियो साहित्य समाजक वस्तु (समाजक साहित्य) नै बनत ताधैर के केकरा की कहै छिऐ से भाँज थोड़े लगत। तँए शुभेक्षु साहित्यकारक दायित्व बनैए जे एक आँखि समाजपर रखि दोसर आँखि जखन कागत-कलमपर रखता तखन मैथिली साहित्ये नहि मिथिलाक कल्याण हएत। राज्यक अर्थ जौं

राजधानीक एकटा कार्यालयसँ लइ छी तँए मिथिलाक समाज छुटि जाइए। मिथिलाक सामाजिक पद्धति वैदिक पद्धतिसँ आगू बढ़त तखने सर्वांगीन विकास हएत।”[8]

“जगदीश प्रसाद मण्डल लेल 1999 ई. अबैत-अबैत आशा-निराशाक बीच संक्रमणक स्थिति बनए लगलैन। 1998 ई.मे दफा 307क केसमे सजाए भऽ गेल रहैन। हाइ कोर्टमे अपील होइमे 20-25 दिन लागि गेलैन। तइ समयमे रामपट्टी जेलमे रहैथ। मने-मन आश्चर्य होनि जे बिना किछु केनौं जहलमे छैथ। तहियो आ अखनो मन नै मानि रहल छेलैन जे कोनो गलती हुनकासँ भेल हुअए। खाएर, अपील भेल, जमानत भेलैन। दिनांक 5-5-2005 इस्वी-कैं ओहो समाप्त भऽ गेलैन।”[9]

जगदीश प्रसाद मण्डलकैं नव काल्हि देखैक इच्छा शुरूहेसँ रहलैन। से ओहिना नहि, केलाक (क्रिया) पछाति आरो मजगूत भेलैन। ओना, हिनकर अपन जीवनक अधिकांश समय, 2000 इस्वी धरि, केस-मोकदमा, जहल यात्रादिमे व्यतीत भेलैन।

श्री जगदीश प्रसाद मण्डल 2000 इस्वीक पछाइत लेखन क्षेत्रमे एला। दू-तीन वर्ष अभ्यासोमे लागल हेतैन। प्राय: 2003 इस्वीक पछाइत हुनक लेखनी चलए लगलैन। जे कि आइ धरि निरन्तर चलि रहलैन अछि। केहेन निरन्तरता से हुनक रचना-संसारकैं देखि बुझल जा सकैए। 2021 इस्वीमे हुनका ‘पंगु’ उपन्यास लेल साहित्य अकादेमी मूल पुरस्कार देल गेलैन अछि। जखन कि हुनक शताधिक पोथी प्रकाशित भऽ चुकल छेलैन। हम ई नहि कहै छी जे साहित्य अकादेमी पुरस्कार लेल साएसँ अधिक पोथी केर रचना करए पड़ैत अछि। जँ से रहैत तखन 24 भाषामे जे एक-एक रचनाकारकैं देल जाइए, सबहक संग ओहिना होइत। वर्ष 2021क साहित्य अकादेमी पुरस्कारसँ पुरस्कृत कएल गेलैन जँ ओइ सूचीकैं देखब ओहनो रचनाकारकैं देखबे करबैन जनिक मात्र पाँच गोट पोथी प्रकाशित छैन। गणनाक हिसाबे बहुसंख्य रचनाकारक कृति एक-आध-दू दर्जनक मध्य छैन। असमियामे श्रीमती अनुराधा

---

[8] *जगदीश प्रसाद मण्डल- एकटा बायोग्राफी, गजेन्द्र ठाकुर, 2013, पृ.- 131*

[9] *तत्रैव, पृ.- 128*

शर्मा पुजारीक 26 गोट पोथी छैन, नेपालीमे श्री छविलाल उपाध्यायक 30 गोट कृति छैन, कन्नड़मे श्री डि.एस. नागभूषणक 40, मलयालममे श्री जॉर्ज केर 49 कृति प्रकाशित छैन आ मैथिलीमे श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक शताधिक पोथी प्रकाशित छैन।

सबहक रचना-संसारकेँ जँ निरन्तरताक खियालसँ देखब तँ श्री मण्डलजीक लेखनीक निरन्तरता सभसँ फराक ओ श्रेष्ठ बुझना जाएत। हिनक पहिल रचना औपन्यासिक कृति ‘मौलाइल गाछक फूल’ छिऐन जे 2004 ईस्वीमे लिखला। 2008 इस्वी धरिक अवधिमे पाँच गोट उपन्यास, एक नाटक तथा किछु कथादि लिखि चुकल छला। मुदा कोनहुँ पत्र-पत्रिकादिमे एक्को गोट रचना प्रकाशित नहि भेल रहैन। तथापि हिनक कलम, लिखबाक क्रम जारी रहलैन- प्रस्तुत अछि ऐ प्रसंगमे हुनकहि लिखल बात- “मौलाइल गाछक फूल 2004 ईस्वीमे लिखल पहिल उपन्यास छी। अखन धरि पाँचटा उपन्यास आ किछु कथा, लघुकथा, नाटक सभ अछि। छपबैक जे मजबूरी बहुतो रचनाकारकेँ छैन से हमरो रहल। मुदा तइसँ लिखैक क्रम नै टुटल। ‘भैंटक लावा’ कथा सेहो दू-हजार चारिक पहिल कथा छी।”[10] 8 नवम्बर 2008 इस्वीमे ‘सगर राति दीप जरय’क 64म कथागोष्ठी डॉ. अशोक अविचलक संयोजकत्वमे हुनक गाम- रहुआ संग्राम (मधेपुर)मे आयोजित भेल छल जइमे जगदीश प्रसाद मण्डलजी उपस्थित भऽ अपन पहिल रचना ‘भैंटक लावा’ कथा केर पाठ केलैन। साहित्य क्षेत्रमे मण्डलजीक ओ पहिल मञ्च छेलैन। ओना, साहित्य लेखन क्षेत्रमे अबैसँ पूर्व माने 2000 इस्वीसँ मण्डलजीक क्रिया-कलाप एक समर्पित समाजसेवीक रहल छैन। तँए ओ केतेको बेर राजनीतिक मञ्चपर बाजि चुकल छला। पहिने बेरमा पंचायत आ रहुआ संग्राम, दुनू मधेपुर ब्लौकक अन्तर्गत पड़ै छल। जे कि जगदीश प्रसाद मण्डलजीक कर्म क्षेत्र रहल छैन। तँए, रहुआ गाममे सेहो मञ्च साझा कऽ चुकल छला।

2008 इस्वीसँ पूर्व जगदीश प्रसाद मण्डलजीक एक्को गोट रचना सार्वजनिक नहि भेल छेलैन। कोनहुँ पत्र-पत्रिकादिमे प्रकाशित नहि भेल

---

[10] *मौलाइल गाछक फूल, उपन्यास, जगदीश प्रसाद मण्डल, आमुख पृ.- 09*

छेलैन। पहिल रचना 'घर बाहर- पटना'सँ प्रकाशित भेलैन। जइ कथाक पाठ रहुआ संग्राममे केने छला, खूब प्रशंसा भेल छेलैन। ऐ प्रसंगमे मण्डलजीक वानगी निम्नांकित अछि-

"डॉ. रामानन्द झा 'रमण'जी ओ कथा मांगि लेलैन। किछुए मासक उपरान्त 'घर बाहर' पत्रिकामे प्रकाशित केलैन। सिद्ध पुरुषक स्थानमे प्रतिष्ठा भेटल। डायरी-कलम भेटल। गमछा-पाग भेटल। लक्ष्मीनाथ गोसाँइक मुर्ति सेहो भेटल।"[11]

घर-बाहरमे एक आर रचना (कथा) प्रकाशित भेलैन। पछाइत 'मिथिला दर्शन- कोलकाता'मे 'चुनवाली' नामक कथा प्रकाशित भेलैन। चुनवाली, भैंटक लावा आ बिसाँढ़, कथा प्रकाशित होइते 'विदेह'क सम्पादक श्री गजेन्द्र ठाकुरजीसँ सम्पर्क भेलैन। तेकर बाद मण्डलजीक रचना सभ पुस्तकाकार रूपमे प्रकाशित हुअ लगलैन।

ऐ तरहेँ जगदीश प्रसाद मण्डलजीक आगमन मैथिली साहित्यक दुनियाँमे होइ छैन। बिनु पाइक अर्थात् बिनु खर्चेक पोथी प्रकाशन मैथिली साहित्यमे नव उदाहरण छल। जगदीश प्रसाद मण्डलजीक 27 गोट पोथी एकसंग श्रुति प्रकाशन, दिल्लीसँ प्रकाशित भेलैन। वर्तमानमे ओही तरहेँ पोथीसभक प्रकाशन पल्लवी प्रकाशन, निर्मलीसँ भऽ रहलैन अछि।

गीत, काव्य, नाटक, एकांकी, कथा, उपन्यास इत्यादि साहित्यक सभ विधामे, हिनक अनवरत लेखन अद्वितीय सिद्ध भऽ रहलैन अछि। अखन धरि दर्जन भरि नाटक/एकांकी, पाँच साएसँ ऊपर गीत/काव्य, उन्नैस गोट उपन्यास आ साढ़े आठसाए कथा-कहानीक संग किछु महत्वपूर्ण विषयक शोधालेख आदिक पुस्तकाकार, साएसँ ऊपर ग्रन्थमे प्रकाशित छैन।

गाम-समाज आ समाजक लोकसँ जगदीश प्रसाद मण्डलकेँ अटूट सिनेह रहलैन अछि। विदेह ई पत्रिकाक सम्पादक श्री गजेन्द्र ठाकुर कहै छैथ- "समाजक सभ वर्ग हिनकर कथ्यमे भेटैत अछि आ से आलंकारिक रूपमे नहि, वरन अनायास, जे मैथिली साहित्य लेल एकटा हिलकोर एबाक समान अछि।

---

[11] *मौलाइल गाछक फूल, जगदीश प्रसाद मण्डल, पल्लवी प्रकाशन, पृ.- 10*

हिनकर कथ्यमे केतौ अभाव-भाषण नै भेटत, सभ वर्गक लोकक जीवन शैलीक प्रति जे आदर आ गौरव ओ अपन कथ्यमे रखै छैथ से अद्भुत। हिनकर कथ्यमे नोकरी आ पलायनक विरूद्ध पारम्परिक आजीविकाक गौरव महिमा मण्डित भेटैत अछि। आ से प्रभावकारी होइत अछि हिनकर कथ्य आ कर्मक प्रति समान दृष्टिकोणक कारणसँ आ से अछि हिनकर बेकतीगत आ सामाजिक जीवनक श्रेष्ठताक कारणसँ। जे सोचै छी, जे करै छी; सएह लिखै छी तइ कारणसँ। यात्री आ धूमकेतु सन उपन्यासकार आ कुमार पवन आ धूमकेतु सन कथा-शिल्पीक अछैत मैथिली भाषा जनसामान्यसँ दूर रहल। मैथिली भाषाक आरोह-अवरोह मिथिलाक बाहरक लोककेँ सेहो आकर्षित करैत रहल आ ओइ भाषाक आरोह-अवरोहमे समाज-संस्कृति-भाषासँ देखौल जगदीशजीक सरोकारी साहित्य मिथिलाक सामाजिके क्षेत्रटा मे नहि वरन आर्थिक क्षेत्रमे सेहो क्रान्ति आनत।"

श्री जगदीश प्रसाद मण्डल मैथिली साहित्यक प्राय: सभ विधामे रचना केनिहार ओहन रचनाकार छैथ जनिक लेखन अनवरत ओ अवाध गतिये चलि रहल छैन। जहिना पद्य विधामे गीत, कविता तहिना गद्यमे एकांकी, नाटक, कथा, उपन्यास, कथामे बीहैन, लघु आ दीर्घ- तीनू, तैसंग प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचनामे सेहो हिनक लेखनी चलैत रहलैन अछि। कथा आ उपन्यासमे तँ नियमित चलि रहलैन हेन। मण्डलजीक नियमितता, माने नित्य-नियमित साहित्य लेखन, एहेन छैन जे साहित्य-रचनाकारक बीच कएगोट मान्यतासभ पर बरबरि प्रश्नचिह्न ठाढ़ करैत रहल अछि।

मण्डलजी 2000 इस्वीक पछाइतसँ साहित्य लेखन आरम्भ केलाह। तइसँ पूर्व किसानी जीवनक बीच रहि समाज सेवामे संलग्न छला, ओ कहै छैथ- "जहिया एम.ए.क विद्यार्थी रही तहिए नोकरीसँ विराग भऽ गेल। आठ बीघा जमीन रहए। खेतीसँ जीवन-यापन करैक बिसवास भऽ गेल। पैंतीस साल धरि समाज सेवा केलाक पछाइत अपन हहरैत शरीर देख किछु लिखै-पढ़ैक विचार जगल।"[12]

2013 इस्वीक अन्तिम मास वा कहि तँ 2014 इस्वीसँ अद्यपर्यन्त,

---

[12] *मौलाइल गाछक फूल, उपन्यास, जगदीश प्रसाद मण्डल, आमुख पृ.- 09*

मण्डलजी जे कोनो रचना केलैन आकि कऽ रहला अछि, तइ सभ रचनाक संग रचना-तिथि सेहो सार्वजनिक करैत रहला। रचना करबाक सन्दर्भमे एक मान्यता अछि जे कोनहुँ रचनाक बिम्ब रचनाकारक मनमे कखनो-कखनो आ कहियो-कहियो अबैत छैक। माने अनायास अबै छइ। अत: ओ नियमित ओ निर्धारित समयक कार्य नहि थिक। मुदा मण्डलजी द्वारा नियमित लेखनसँ ई मान्यता कमजोर बुझना जाइत अछि। नियमित लेखनसँ सद्य: ओहन मान्यतापर प्रश्नचिह्न लगैत अछि। हँ, एहेन मान्यता बेकतीगत भऽ सकैत अछि जे 'विषय-बिम्ब कखनो-कखनो आ कहियो काल अबैत छैक'।

श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजीक निरन्तर लेखनसँ आरो-आर मान्यता सभ स्वत: निरस्त भेल जा रहल अछि। मनुक्खक जीवनमे होइत निरन्तर-परिवर्तनकेँ अनुभवी जकाँ मण्डलजी अपना रचनामे रेखाङ्कित करै छैथ। 'जहाँ न जाए रवि वहाँ जाए कवि' हम एतबए सुनैत रही, मुदा जगदीश प्रसाद मण्डल कहै छैथ- 'जेतए नइ जाए रवि ओतए जाए कवि आ जेतए ने जाए कवि ओतए जाए अनुभवी'।

मण्डलजीक रचनामे सदैव नीक-बेजाकेँ बिलगेबाक सुन्दर प्रयास देखबामे अबैत अछि। हिनक प्रत्येक रचनामे खास गुण छैन जे पाठक सहजतासँ बन्हा जाइ छैथ। बेकतीगत जीवनक बीच नीक-बेजाक दर्शन करबैत सहजतासँ पाठककेँ ओइठाम लऽ कऽ चलि जाइ छैथ जैठाम मनुक्ख रहैत तँ अछि सदिखन मुदा अनभिज्ञ जकाँ। अपन लगक चीजकेँ नहि देखि पबैत अछि। समाजक बीच एहेन बहुत बेवहार अछि जे रूढ़ रहितो नीक जकाँ चलि रहल अछि। जेकर परिचय ओ दर्शन अपन रचनामे मण्डलजी नीक जकाँ करबैत रहल छैथ। मण्डलजी कोनो चीजक दशा-दिशाक परिचयक संग ओकर कारण तथा समय-सापेक्ष निदान-परिष्कार सेहो ई अबस्स करेबाक कोशिशमे लागल रहै छैथ। ई हिनक खास गुण छिऐन। कोनहुँ मनुक्खक परिचय ओकर लगन, धैर्य, साहस तथा विश्वाससँ होइत अछि। विश्वास एहेन चीज छी, जेकर वास्तविक रूप कोनो बेकतीक कार्यक नियमिततामे देखार होइत अछि, नियमितताक अपन छवि होइ छइ। तइ नजरिये जँ देखब तँ जगदीश प्रसाद मण्डलजीक अप्पन छवि छैन। जे हिनक परिचय भेल। ई अपन सतत क्रियाशीलता ओ रचना धर्मिताक लेल विभिन्न संस्थासभक द्वारा

सम्मानित/पुरस्कृत होइत रहला अछि, यथा- विदेह सम्पादक मण्डल द्वारा 'गामक जिनगी' लघु कथा संग्रह लेल 'विदेह सम्मान- 2011', 'गामक जिनगी व समग्र योगदान हेतु साहित्य अकादेमी द्वारा- 'टैगोर लिटिरेचर एवार्ड- 2011', मिथिला मैथिलीक उन्नयन लेल साक्षर दरभंगा द्वारा- 'वैदेह सम्मान- 2012', विदेह सम्पादक मण्डल द्वारा 'नै धारैए' उपन्यास लेल 'विदेह बाल साहित्य पुरस्कार- 2014', साहित्यमे समग्र योदान लेल एस.एन.एस. ग्लोबल सेमिनरी द्वारा 'कौशिकी साहित्य सम्मान- 2015', मिथिला-मैथिलीक विकास लेल सतत क्रियाशील रहबाक हेतु अखिल भारतीय मिथिला संघ द्वारा- 'वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' सम्मान- 2016', रचना धर्मिताक क्षेत्रमे अमूल्य योगदान हेतु ज्योत्स्ना-मण्डल द्वारा- 'कौमुदी सम्मान- 2017', मिथिला-मैथिलीक संग अन्य उत्कृष्ट सेवा लेल अखिल भारतीय मिथिला संघ द्वारा 'स्व. बाबू साहेव चौधरी सम्मान- 2018', चेतना समिति, पटनाक प्रसिद्ध 'यात्री चेतना पुरस्कार- 2020', मैथिली साहित्यक अहर्निश सेवा आ सृजन हेतु मिथिला सांस्कृतिक समन्वय समिति, गुवाहाटी-असम द्वारा 'राजकमल चौधरी साहित्य सम्मान- 2020', भारत सरकार द्वारा 'साहित्य अकादेमी पुरस्कार- 2021', साहित्य ओ संस्कृतिमे महत्वपूर्ण अवदान लेल अमर शहीद रामफल मंडल विचार मञ्च द्वारा 'अमर शहीद रामफल मंडल राष्ट्रीय पुरस्कार- 2022', मिथिलांचल विकास परिषद्, लहेरियासराय, दरभंगा द्वारा 'यात्री सम्मान- 2022' तथा साहित्य, संस्कृति, सामाजिक आ मिथिलांचलक सर्वांगीण विकासक क्षेत्रमे उल्लेखनीय योगदान हेतु 'शिखर सम्मान- 2022'

मैथिली साहित्यक काव्य संसार बेस व्यापक अछि। भारतीय अन्यान्य भाषा साहित्यमे मैथिली साहित्यक महत्व सेहो कोनहुँ आन भाषा-साहित्यसँ कमजोर नहि अछि। जहाँतक काव्यधाराक प्रश्न अछि तँ थोड़ेक मध्ययुगीन काव्यधारासँ प्रभावित चिन्तनधारा बुझना जाइत अछि। श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजीक काव्यधारा ओइसँ हटिकऽ अछि। हिनकर काव्यमे जहिना विषय-वस्तु तहिना यथार्थवादी दृष्टिकोणक झलक सेहो भेटैत अछि। गौरसँ देखलापर साफ देखबामे आबि जाइत अछि जे मैथिली काव्यधाराकेँ मुख्य रूपसँ या तँ भक्तिपरक चिन्तनधारा वा शृंगारपरक चिन्तनधारा गछारिकऽ पकड़ने छल। ओना, गौण रूपमे प्रकृतिपरक काव्यक संग मिथिलाक पाबैन-तिहार आ

समाजक रीति-रिवाज सेहो अछिए, मुदा तइ सभसँ हटिकऽ मण्डलजीक रचना बुझना जाइत अछि। ई अपन काव्यमे मानवीय मूल्यक यथार्थपरक चित्रकेँ रखबाक चेष्टा केने छैथ। जे मैथिली साहित्यक काव्यधाराक भावमे नव दृष्टिकोणक परिचायक अछि।

अन्धविश्वाससँ जकड़ल चिन्तनधारा, जे समाजकेँ सही जीवन-पथसँ हटा अज्ञानता, रूढ़िवादिता दिस धकैल रहल छल तइसँ सचेत करैत मण्डलजी अपन यथार्थवादी दृष्टिकोणसँ अपना जीवनक मूल बुनियादक आधारपर यथासाध्य ठाढ़ करबाक प्रयास केलैन अछि।

श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक पद्य रचना संसार हुनक गद्य रचना संसारक अपेक्षा बहुत न्यून छैन। अखन धरि लगभग 500 पद्यक सृजन केलाह अछि। जखन कि नाटक, एकांकी, उपन्यासक अलाबे हजारक करीबमे कथाक सृजन केने छैथ। भऽ सकैए आगाँ आरो पद्यक सृजन करैथ। मुदा अखन धरि पाँच साए केर करीब गीत/कविता लिखलैन, जे 12 गोट पोथीमे प्रकाशित छैन। ओ पोथी सभ अछि- 1. इन्द्रधनुषी अकास (2013/2020), 2. राति-दिन (2013/2020), 3. तीन जेठ एगारहम माघ (2013/2020), 4. सरिता (2013/2020), 5. गीतांजलि (2013/2020), 6. सुखाएल पोखरिक जाइठ (2013/2020), 7. सतबेध (2018), 8. चुनौती (2019), 9. रहसा चौरी (2019), 10. कामधेनु (2020), 11. मन मथन (2020), 12. अकास गंगा (2020)

उपरोक्त छअ गोट पोथी जे सभ 2013 इस्वीमे प्रकाशित अछि, यथा- 'इन्द्रधनुषी अकास', 'राति-दिन', 'तीन जेठ एगारहम माघ', 'सरिता', 'गीतांजलि'क आ 'सुखाएल पोखरिक जाइठ'क प्रथम संस्करण 'श्रुति प्रकाशन', न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली- 110008 सँ प्रकाशित भेल छैन।[13] बाँकी 'सतबेध'सँ लऽ कऽ 'अकास गंगा' धरिक प्रकाशनक संग उपरोक्त छबो पोथीक अग्रिम संस्करण सेहो 'पल्लवी प्रकाशन', तुलसी भवन, जे. एल. नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली, जिला- सुपौल, बिहार : 847452 सँ प्रकाशित छैन।[14] ❑

---

[13] *ISBN : 978-93-80538-46-4, इन्द्रधनुषी अकास 2013, श्रुति प्रकाशन*

[14] *ISBN : 978-93-88811-39-2, इन्द्रधनुषी अकास 2020, पल्लवी प्रकाशन*

इन्द्रधनुषी अकास

पद्य विधामे जगदीश प्रसाद मण्डलजीक पहिल पोथी ‘इन्द्रधनुषी अकास’ छिऐन। ‘इन्द्रधनुषी अकास’ पद्य विधामे मण्डलजीक प्रथम कृति छिऐन। उक्त रचनासभक लेखन 2010 इस्वीसँ पूर्वहि मण्डलजी केने छैथ। ओना, एकर पहिल संस्करण 2013 ई.मे श्रुति प्रकाशनसँ प्रकाशित भेल अछि। ‘राति-दिन’ हिनक द्वितीय पद्य संग्रह छिऐन। राति-दिन पद्य संग्रहक आमुखमे मण्डलजी स्वयं लिखने छैथ- “मैथिली कथा-गोष्ठीक आयोजनमे आठ दिन बँचल छल। जनकपुरक गोष्ठी तँए जेबाक विशेष जिज्ञासा।” जनकपुरमे दिनांक 03.04.2010क श्री राजाराम सिंह ‘राठौर’क संयोजकत्वमे 69म कथागोष्ठी आयोजित भेल छल। जइमे श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजी उपस्थित भऽ अपन किछु पोथीसभक लोकार्पण सेहो करौने छैथ मुदा ओ 2009-2010 इस्वीक प्रकाशित पोथीसभ छल।

ओइ समय प्रकाशन बाटपर मण्डलजीक अनेको पोथीसभ रहैन। जेना- पद्य विधामे ‘इन्द्रधनुषी अकास’क अलाबे ‘राति-दिन’, ‘तीन जेठ एगारहम माघ’, ‘सुखाएल पोखरिक जाइठ’, ‘गीतांजलि’। आ गद्यमे नाट्य कृति- ‘कम्प्रोमाइज’, ‘झमेलिया बिआह’, ‘रत्नाकर डकैत’, ‘स्वयंवर’, तथा औपन्यासिक कृति- ‘नै धाड़ैए’, ‘बड़की बहिन’, ‘ठूठ गाछ’क अलाबे कथा विधामे- ‘तरेगन’, ‘बजन्ता-बुझन्ता’, ‘शंभुदास’, ‘रटनी खढ़’, ‘अर्द्धांगिनी’, ‘सतभैंया पोखैर’, ‘गामक शकल-सूरत’, ‘अपन मन अपन धन’, ‘समरथाइक भूत’, ‘अप्पन-बीरान’, ‘बाल गोपाल’, ‘भकमोड़’, ‘उलबा चाउर’ इत्यादि। मुदा तइमे किछु पोथीकेँ छोड़ि बाँकी पोथी श्रुति प्रकाशन, दिल्लीसँ 2013 ई.मे प्रकाशित भेलैन। शेष बँचल पोथीसभ पछाइत पल्लवी प्रकाशनसँ प्रकाशित भेलैन।

‘इन्द्रधनुषी अकास’क पहिल संस्करणक आमुखमे डॉ. कैलाश कुमार

मिश्र कहै छैथ- “इंद्रधनुषी अकास’ सरिपहुँ कविताक प्रकार, छोट-पैघक हिसाबे, भावनाक प्रवाहक हिसाबे, अनेक विषयमे होबाक कारणेँ बहुरंगी चुनरी अछि। अतेक विस्तृत विधा आ विषयकेँ समेटबाक कारणेँ ऐ सङ्कलनक नामकरण एहिसँ उत्तम नइ भऽ सकैत अछि : वैविघ्यसँ भरल, मनोरंजक, रंगारंग, दीवास्वप्न, सोहनगर-मनोरंजक आ मनोहारी अकास। एहिमे जीवनक यर्थाथ अछि, कविक कल्पनाक संसार अछि, उपमा आ अलंकार अछि, जीवनक दर्शन अछि, माटिसँ सिनेहक उद्गार अछि, गीत अछि, भाव अछि, अर्थ विन्यास अछि, प्रेमक अनुभवजन्य परिभाषा आ प्रवाह अछि, प्राकृतिक अनुराग अछि, ग्राम्य-जीवनक झांकी अछि, चीर प्राचीन आ चीर नवीन विचार अछि।

हिनकर ई कविता संग्रह हाथक आँगुर जकाँ थिक। सभ आँगुर स्वतंत्र अछि, मुदा सभ जुड़ल अछि तरहत्थीसँ। तहिना हिनकर रचना ‘इंद्रधनुषी अकास’ नामक मालामे गांथल पैंतालीस गोट कविता स्वतंत्र अछि- विषय, भाव, शब्द–चयन, प्रेम, उपमा आदिक स्वभावसँ परन्तु अन्तत: सभ कविता एक तागसँ गांथल अछि ओ ताग थिक जगदीश प्रसाद मण्डलक व्यक्तित्व आ दृष्टिकोण।

सभ कविता एक-सँ-बढ़ि कऽ एक अछि। “माटिक फूल, गोधन पूजा, झगड़ा, नजैर, भभूत, पुरुषार्थ, अगहन, केना मेटत गरीबी इत्यादि किछु एहेन कविता अछि जेकरा पाठक बेर-बेर पढ़ता।

मैथिली कविता संसारमे ऐ अनुपम धरोहरकेँ स्वागत अछि। पाठक जँ कविताकेँ मिथिलाक परिवेशमे बिना कोनो पूर्वाग्रहसँ अध्ययन करथि तँ ऐ कविताक सरोवरमे जतेक डुमकी लगेता ततेक नवीनता आ स्फूर्ति प्राप्त करता। एहिमे कोनो संदेह नहि।”

प्रस्तुत काव्य ‘इन्द्रधनुषी अकास’मे गतिशील जीवनक चरचा करैत मण्डलजी कहै छैथ-

“चल रे जीवन चलिते चल।
संगी बनि तूँ संगे चल
जौवन चल जुआनी चल

जिनगानी संग मर्दगानी चल
चिन्तन संग चिणमय चल।
चल रे जीवन चलिते चल।"

जखनहि मनुक्ख अपन जीवनक मूल्यकेँ सही धरातलपर ठाढ़ करैत आगू बढ़त तखनहि जीवनक लेल जे मूल आवश्यकता अछि तेकरा अपनाबए पड़त। जखन जीवनक मूल आवश्यकताकेँ अपनाए जीवनमे उतारल जाएत तँ जीवनक गाड़ी अपन सही पटरीपर चलए लगत। जहिना प्रकृतिमे सभ किछु, माने चान, सूर्य, तरेगन इत्यादि गतिशील अछि जे अपन सीमामे चलायमान रहैए, तहिना ने जीवनो अछि। कवि सएह कहै छैथ-

"ग्रह नक्षत्र सभटा चलै छै
सूर्ज तरेगन सेहो चलै छै
दोहरी बाट पकैड़ चान
अन्हार-इजोतक बीच चलै छै।
देखा-देखी चलिते चल।
चल रे जीवन चलिते चल।"

उपर्युक्त पाँतिमे चानकेँ दोहरी बाट पकैड़ चलब कहल गेल अछि। जेकर अर्थ अछि जे जहिना पूर्णिमा भेला पछातइ चान कटि-कटि पाछू मुहेँ चलए लगैत अछि तहिना आमावास्याक पछाइत आगू मुहेँ सेहो चलैए।

कविताक अन्तमे जीवनक सार्थकताकेँ प्रतिपादित करैत कवि कहै छैथ-

"टुटए ने कहियो सुर-ताल
हुए ने कहियो जिनगी बेहाल।
जहिए समटल जिनगी चलतै
बनतै ने कहियो समय काल।
बुझि देख तूँ चलिते चल
चल रे जीवन चलिते चल।"

'बौड़ाएल बटोही' कविताक माध्यमसँ कवि ओहन जीवनक दर्शन करौलैन अछि जे जीवनक सही मार्गसँ हटि बौड़ाएल चलैए। सही मार्गसँ हटि चलैक कारण ओकर अज्ञानता सेहो छै आ अन्धविश्वासक संग रूढ़वादिता सेहो छइहे। जइसँ ओ अपन जीवन-मार्गक सही दिशा बुझिये ने पबैए। कवि कहै छैथ-

"जहिना कोबर कनियाँ-नुकाइत
तहिना बाटो नुकाएल छै।
अछैते घरमे रहितो रहैत
नजैरसँ कतियाएल छै।"

सभकेँ अपन पढ़ल मोन अछिए जे बच्चेमे माने मिडिले स्कूलमे पढ़ने छी 'इमानदारी सर्वोत्तम नीति छी', मुदा इमानदारी की छी, सेहो बुझिते हएब आ तेकर पालनो तँ समयक अनुकूल सभकियो करितो छीहे। आब प्रश्न अछि जे जे बुझै छी आ जे जे करै छी तेकर फल केकरो आनकेँ तँ नहि, अपने-अपने भोगबो करए पड़िते अछि, सभकेँ अपने-अपने। ओना, ईहो बात सत्ये अछि जे ऐ चीजकेँ सभकियो ससमय नहि बुझि पबै छैथ। बेसी लोक जीवनक उत्तरार्द्धमे जा कऽ बुझै छैथ। बहुत कम लोक ससमय बुझि पबै छैथ। आखिर एना किए होइए? कवि कहै छैथ-

"बाटे बिला बुइध
बाटे बिसैर गेल।
जेम्हरे जे चलल
तेम्हरे पहुँच गेल।
छुटि गेल मनोकामना
छुटि गेल कामनाक भूमि
कामनो कमि-कमि
छलैक गाबए झुमि-झुमि
छलैक गाबए...।"

जे बेकती अपन घर-दुआर, माता-पिता, भाए-भैयारीकेँ बिसैर जाइए, पूंजीवादी सोच ओकरापर हावी भऽ जाइ छै। ओहन सोच आ बेवहारबला लोक-ले कवि उड़ियाएल चिड़ैसँ जोड़ि कहि रहला अछि जे ओकरा भरि पोख घोघ जेतए भरतै ओ ओतए जाकऽ बास करत। ओ बेकती चिड़ै सदृश अपन सभकिछुकेँ बिसैर जाएत-

"उड़ियाएल चिड़ैक ठेकाने कोन
उड़ि केतए जा बास करत।
भरि पोख घोघ भरतै जेतए
दिन-राति जा रास करत।
ओहन चिड़ैक आशे कोन
जे बिसैर जाएत डीहो-डावर।
छोड़ि-छाड़ि सभ किछु अपन
रखैत मन खाली स्मृतक।
रखैत मन खाली स्मृतक।"

जीवनक जे रास्ता अछि ओ सोझ-सपाट थोड़े अछि ओ तँ एहेन सर्पिली अछि, जेकरा पकड़ब असम्भव जँ नहि तँ कठिन जरूर अछिए। ओना, जे जीवनक रहस्यकेँ बुझि-परेखि चलनिहार छैथ ओ तँ सही रास्ताकेँ पकैड़ चलबे करै छैथ, मुदा सामान्य जनक लेल असाध्य तँ अछिए। कवि कहै छैथ-

"पट्टामे पट्टा सटि-सटि
सदिखन बन्न रहै छै दुआरि।
आठो पहर दिन-राति घुमै छै
देख ने पेबैत पड़ाएल पथिक।
कखैन केमहर घुसैक-फुसैक
पाबि ने पाबए पथ पथिक।"

प्रस्तुत पाँतिक माध्यमसँ कवि सघन जिनगीक जटिलता दिस इंगित

केलैन अछि। ई हिनक लेखनीक खास गुण छिऐन जे जटिल-सँ-जटिल ओझरीकेँ जहिना ई सोझमे अनै छैथ, तहिना सोझरीकेँ सेहो अनैसँ बाज नहि जाइ छैथ। मुदा से ई चीज हिनका गद्यमे बेसी देखबामे अबैए, पद्यमे ओहन अवकाश हिनका नहि भेटि पबै छैन। तँए ओझरी-सोझरी दुनूकेँ देखबाक-बुझबाक लेल आरो-आरो रचनापर दृष्टिपात करब आवश्यक। तत्काल इन्द्रधनुषी अकासक अन्य रनचासभक शीर्षक-रूपपर विचार कएल जाए-

'मन-मणि', 'चल रे जीवन', 'धोब घाट', 'सासु-पुतोहु वार्ता', 'बौड़ाएल बटोही', 'अपनेपर हँसै छी', 'धोबि पाट', 'साँझ', 'सात्त्विक भाव', 'दिव्य शक्ति', 'उड़ियाएल चिड़ै', 'रणभूमि', 'सान-धार-धारा', 'पपीहाक गीत', 'विषधरक बीख', 'मिथिला केहेन', 'मौसमक मुस्की', 'आशा', 'आँखि', 'मधुरस', 'बीआ', 'महजाल', 'बाट', 'डभियाएल डगर', 'लज्जैत', 'गीत-1', 'गंग स्नान', 'फनकी', 'सभ किछु छै जालेमे', 'गंगा नहाइ', 'गोधन पूजा', 'माटिक फूल', 'झगड़ा', 'नजैर', 'कमलाधार', 'बाल कविता', 'विभूत', 'झूठ-साँच', 'नव दुनियाँ', 'पुरुषार्थ', 'सरस्वती वन्दना', 'भीड़-भार', 'सरस्वती हमर', 'अगहन ', 'केना मेटत गरीबी'। ❑

राति-दिन

जगदीश प्रसाद मण्डलजी 'राति-दिन' काव्य संग्रहमे सेहो 'मनमनियाँ-लिखलैन अछि। ई हुनक तेसर पोथी छिऐन जइमे अपन रचना लेखनक मादे किछु अप्पन बात लिखलैन अछि। पहिल 'मौलाइल गाछक फूल' उपन्यासमे, दोसर 'मिथिलाक बेटी' नाटकमे आ तेसर प्रस्तुत पोथीमे माने 'राति-दिन' काव्य संग्रहमे।

'राति-दिन' पद्य संग्रहमे 'मनमनियाँ' शीर्षक मध्य जे किछु मण्डलजी लिखलैन तेकर महत्वपूर्ण भागकेँ हम ऐठाम यथावत राखि रहलौं अछि-

"एक सङ्कल्पक संग मन आगू बढ़ल। पद्य सेहो लिखैक विचार जगल। मुदा गद्ये जकाँ तँ पद्योक संसार छै। पोखरिक अथाह पानिमे डुमए लगलौं। धरतीपर पएर रोपए चाही तँ साँस फुलए लगए आ हाथ चलबैत ऊपर होइ तँ सोल्होअना पानियेँमे चलि आबी। धरती छुटि जाए! विचित्र स्थिति बनि गेल। मनक मनोरथ मनेमे घुरियाए लगल। आब तँ बीस-पच्चीस वर्षक उमेरो नहियेँ अछि जे बिआह, दुरागमन आकि कनियाँ-बरक गप-सप्प लिखब। साठिसँ ऊपर उमेरमे पहुँच गेल छी। सींग कटाएब सेहो नीक नै बुझि पड़ए। मुदा सींगो कटा तँ पड़ैक जेरमे मिझ्झर भेनिहारक तँ कमी नहि! मन आरो ओझरा गेल। आगू तकलौं तँ बुढ़-बुढ़ानुसपर नजैर पड़ल। नजैर पड़िते खौंझ उठि गेल। केना नै उठैत? साठि सालक जिनगीक अनुभव केनिहार सभ तँ अपने मकड़जालमे ओझरा जाइ छैथ। मुदा तेकर दोख किनका सिर मढ़ल जाए? किछु फुरबे ने करए। आगू-पाछू करैत मन घुमि दूधमुहाँ बच्चा सभ दिस बढ़ल। ठमकलौं। मुदा हाटक बरद जकाँ मुँह-कानक रंग-रूप देख जोड़ा लगबए चाहलौं तँ ने दूटाक मुँहक जोड़ा लगए आ ने चालि-ढालिक। फेर लजैनी उपजल राड़ीक

खरहोरि जकाँ मन ओझरा गेल। पलाएल खढ़ रहने जमीन नजैरपर पड़बे ने करए। तेना भऽ कऽ झँपाएल! अन्दाजसँ डेग बढ़बौ चाही तँ चुप-चुप लजैनीक काँट गड़ए। आब की करब?

रस्ता चलल राही जकाँ बिनु चलनहि देह-पएर दुखाए लगल। एक्के उमेरक दूटा बच्चामे एतेक अन्तर केना आबि गेल? एक दिस पाँचे वर्षक बच्चा दस वर्षबलाक कान कटैए तँ दोसर दिस तीनियोँ वर्षक बच्चासँ पछुआएल रहैए। तहूमे शरीरेक अन्तर नहि, बुधियोक दूरी! एहनो तँ होइते अछि जे पच्चीसो-तीस वर्षबला दस-बारह वर्षक बच्चोसँ पछुआएल अछि!

प्रश्न उठैत जे बच्चा केकरा कहल जाए? शरीरक काँतिये आकि बुधिक काँतिये? तत्-मत् करैत बोधेक अधारपर बच्चाक सीमा निर्धारित करए चाहलौं। मुदा कोनो भारी मोटा उठबैमे तँ सीमा ढहि जाइत अछि। हारि-थाकि मन एतए पहुँच गेल- जखन जे विचार हएत तखन से लिखब। जइसँ कविता संग्रह एकबट्ट नै वरण् इन्द्रधनुष जकाँ सतरंगा भऽ गेल अछि। सतरंगा होइक दोसर कारण ईहो भेल जे अखन धरि कविताक मर्मकेँ नीक जकाँ नै पाबि सकलौं अछि। कखनो तुकबन्दी तँ कखनो खटमिट्ठी तँ कखनो रका-टोकीकेँ बुझै छी। जखन जेहेन मन खनहन रहल तखन से बुझै छी। अपन बात एतबे कहब।”[15]

‘राति-दीन’क सन्दर्भमे कवि लिखने छैथ- “सतरंगी वैभवसँ सज्जित पोथी समक्ष अछि। अपन साहित्यिक जीवनक श्रीगणेश करबामे कवि वा कलाकार केतए-सँ आ केना प्रेरणा पबैत, ‘मंद कवियश: प्रार्थी’क कार्य शुरू करैत से कहब कठिन। तेकरो कारण अछि। कियो पचपन-साठि वर्षक अवस्थामे साहित्य-संसारसँ संयास लइ छैथ, तैठाम अपने शुरूए केलौं। तँए विचारमे किछु अन्तर हएब सोभाविके अछि। कियो जुआनीक रसमे डुमि कविता लिखलैन, तैठाम अपनाकेँ फीका बुझै छी। मुदा ईहो तँ बात अछि जे कियो मृत्युक चित्रण करैमे अपने मरि कऽ अनुभव नै करैत।

..भरिसक तखन प्रेरणा-स्रोत भीतर नै भऽ अधिकतर बाहरे रहैत अछि।

---

[15] *राति-दिन, जगदीश प्रसाद मण्डल, पल्लवी प्रकाशन, पृ.- 09-10*

अपना समैयक कविक रचनासँ कोनो-ने-कोनो रूपे प्रभावित भऽ उदीयमान कवि अपन लेखनीक परीक्षण करैत। जहिना एक दीपसँ दोसरमे ज्योति अबैत तहिना आन-आन कविक कृति हृदयक सौन्दर्यसँ स्पर्श करा दीपशिखा जरबैत। ओइ ज्योतिमे अपन भीतर-बाहरक रूचिक अनुरूप ओइमे संस्कार दऽ अपनापनक छाप लगबैत...।"[16]

'संघर्ष' ई प्रस्तुत संग्रहक पहिल रचना छी। 'संघर्ष' काव्यमे मनुक्खकेँ जखन अपन पएर-हाथक ज्ञान होइ छै, माने जहिया ओ ई बुझि जाइए जे हमरो पएर अछि, पएरमे पाँच गोट आँगुर अछि, हमहूँ ठाढ़ भऽ सकै छी, चलि सकै छी। हमरो हाथ अछि, हाथमे आँगुर अछि आ से ओहिना अछि, जहिना सभकेँ छै। तखन ओकरा अप्पन मनक बिसवास जगैए। अपनाकेँ जानए लगैए। अपन जिनगीकेँ ताकए लगैए-

"पएर पञ्ज पबिते पबैत
पैजन चाह करैए।
तहिना चाहि चेत कुण्ड
धारण जिनगी करैए।"

कवि आगाँ कहै छैथ-

"काया-माया संग सदए
मिलि संग जिनगी पबैए
शिव सदृश सीमा सिरैज
राति-दिनक रूप धड़ैए।"

संग्रहक दोसर काव्य अछि- 'साँझ-भोर', भोर आ साँझक परिचय करबैत कवि कहए चाहै छैथ जे जखने जागी तखने परात। माने उदय रूपमे जागब भेल आ तइसँ अलग जे रूप अछि ओ साँझक श्रेणीमे अछि माने अन्हार पक्षमे। इजोत पक्ष भोर आ अन्हार पक्ष भेल साँझ। जखनसँ अहाँ किछु करए लगै छी तँ ओ पहर अहाँक भोर पहर भेल, अर्थात् अहाँक उदय पहर वएह

---

[16] *राति-दिन, जगदीश प्रसाद मण्डल, पल्लवी प्रकाशन, पृ.- 10*

भेल। देखू, कवि ऐ प्रसंगमे जे कहलैन अछि-

“केकरो साँझ केकरो भोर
केकरो उदय केकरो अस्त
दिनक अस्त साँझ अगर
रातिक तँ उदइए छी।
बारहे घण्टा दिनो चलै छै
तेतबे टा ने रातियो होइ छै।”

भोर-साँझक परिचय करौला बाद कवि जीवन क्रिया आ तइ भीतरमे जे दुनियाँक रूप अछि तेकरा उजागर करैत लिखलैन अछि-

“साँझ साँझ गाबि जगैए
घरमुहाँ जे बाट धड़ैए।
मुदा पराती कहि परात
संग सूर्य सेहो धड़बैए।
अजब रूप दुनियाँक बनल छै
नागे बीच मणियोँ सजल छै।
मुदा मढ़ि मणि ओइ नागकेँ
रातिये बीच प्रकाश करै छै।
दीन दिनानाथक पबिते पबैत
हिहिया-हिहिया हीन कहै छै।
हनछिन-हनछिन करिते करैत
दिन सानि राति बनबै छै।”

अही तरहेँ आगाँक काव्यमे कवि समयक संग मनुक्खक कर्तव्य-कर्मक बात केलैन अछि। ओ ‘समय’ शीर्षक काव्यक माध्यमे कहै छैथ-

“समय संग तखने चलै छै
संगी बना संग मिलि चलबै।

बाट-घाट बीच देखैत-सुनैत
रस्सा-कस्सी करैत रहबै।"

भाय, जखन संगी बनब तँ ओहन संगी बनिकऽ संगे-संग चलब सेहो सीखू जे समयक संग देखि-परेखिकऽ चलब अछि-

"संगी तँ ओहन संगी छी
देखि परैख जेहेन चलबै।
तेहने पग पगहा पहिरा
आगू-पाछू चलैत रहबै।"

किएक तँ-

"समय ने केकरो संग धड़ै छै
ने केकरो छोड़ै छै।
अपन-अपन भागे-करमे
अपने आँखिए पकड़ै छै।"

एही तरहेँ कवि आगाँ कहै छैथ-

"समय ने केकरो संग धड़ै छै
ने केकरो छोड़ै छै।
अपन-अपन भागे-करमे
अपने आँखिए पकड़ै छै।" ❑

तीन जेठ एगारहम माघ

'तीन जेठ एगारहम माघ' श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक तेसर पद्य कृति छिऐन। हिनक पद्य रचना नवीन चेतनासँ परिपूर्ण अछि। ओ कहै छैथ- "अपन कवितामे मध्य-युगक आध्यात्मिक आ आदर्शवादक चेतनाकेँ नवीन लोक-चेतनाक स्वरूप देबाक प्रयत्न कऽ ओकर निष्क्रियताकेँ सक्रिय बनबैक प्रयासक संग ओकर वैयक्तिकताकेँ उन्नत सामाजिकतामे परिणत करैक चेष्टा कएल।"

ऐ पोथीमे कुल 37 गोट रचना संग्रहित कएल गेल अछि।

पहिल रचनाक शीर्षक अछि 'गाछक रंग बदैल रहल छै'। परिवर्तन संसारक स्वभाविक प्रक्रिया अछिए। मुदा ओ देखै आ बुझैमे सबहक अपन-अपन नजैर काज करैत अछि। कवि अपना दृष्टिए देखि कऽ कहै छैथ-

"गाछक रंग बदैल रहल छै
मौसम संग सुधैर रहल छै।"

अही क्रमकेँ आगाँ बढ़ैत कहलैन अछि-

"थल-कमल जकाँ कहियो
गाढ़-लाल-उज्जर बनै छै।
तहिना फूल-फल कोढ़ी जकाँ
झड़ि-झड़ि कोनो फलो बनै छै।"

आशक संग विश्वासकेँ सेहो समाहित करैत कहै छैथ-

"आशा आश लगा-लगा

जीत अपराजित बनैत रहै छै।

सुधैर रूप बदैल चालि

कारी काजर चमैक उठै छै।”

मुदा जहिना नीकक संग अधला सेहो अछि, दिनक संग राति सेहो अछि आ तहिना एकदिस जँ बहुत विश्वास छैन तहिना एहनो स्थितिसँ कविकेँ भेँट होइ छैन जैठामक परिचय करबैत कहै छैथ-

“कोढ़ पकैड़ कोढ़ी कहै छै

कोंढ़िया कोढ़ पकड़ने छैँ।

केना कऽ फड़बै-फुलेबै

रेहे-रेह जकड़ने छैँ।”

आगाँ कहै छैथ-

“देखलोसँ नहि देखि पड़ै छै

सुनलोसँ नहि सुनि पबै छै।

टीश-पीड़ा टीशा टीश-टिशिया

घोर-घोर मन बनबैत रहै छै।

घोर-घोर मन बनबैत रहै छै।”

समाजक बीच एक-पर-एक विचारधारा काज करैत अछि। माने रंग-बिरंगक विचार अपन-अपन स्थान समाजमे बनौने अछि। जे अपन-अपन गुण-स्वभावक अनुरूप फड़ैत-फुलाइत रहैए। तेकरा कवि कोनो बेजा नहि कहै छैथ। मुदा समाजक जे स्थिति अछि, समाजमे सामाजिकताक पातर स्थिति अछि, कवि तइ दिस ध्यान आकृष्ट करैत गीत गबै छैथ-

“जाल समाज महजाल बनल छै

हाना बनि परिवार सजल छै।

जाल समाज महजाल बनल छै।

बिनु नापे हाना बनि बन

हाना बीच खाना सजल छै।
हाना बुझि खाना लपैक
खानामे जा-जा फँसै छै।
खानामे जा-जा फँसै छै।
मीत यौ, जाल समाज...।”

जेतेक सम्प्रदाय सभ अछि ओ अपना-अपना हिसाबे कोनो बेजा थोड़े करए चाहैए। माने, कियो ई थोड़ै चाहै छैथ जे समाज गर्तमे चलि जाउ। मुदा ओहन स्थिति अछि किए। ई तँ एक प्रश्न बनि सबहक सोझमे अछि। देखू, मण्डलजीक पात्र गीत गाबि-गाबिकऽ की कहै छैथ-

“जान गमौनाइ खेल खेलि
बँचैक कहाँ उपाए करै छै
ऊपर कुदि-कुदि फानि चाहि
गोर गोरिया गुहारि करै छै।
मीत यौ, जाल समाज...।
जालो रूप अदैल-बदैल
कखनो शब्द भवजाल कहै छै।
भवजाल घुरिया-घुरिया
डुमि-डुमि भव सार मरै छै।”

अपन सङ्कल्प-शक्तिकेँ जगबैले कवि खुलिकऽ कहै छैथ-

“जाधैर मन सङ्कल्पित नहि
ताबे केना उद्देश्य कहबै छै
सङ्कल्पे ने तन-मन बीच
सीमा दइत डेग बढ़बै छै।”

प्रत्येक मनुक्खक देहमे पानि होइत अछि। देहक पानि। जहिना पौधामे पहिने कोढ़ी निकलै छै तखन ओ फुलाइए तहिना मनुक्खक देहक पानि जखन

फुलाइ छै तँ काजक रूपमे ओ सोझा अबैए-

“मीत यौ, देहक पानि तखैन फुलाइ छै
कोढ़ी बनि जखन काज रूप लगै छै।
देहक पानि तखैन फुलाइ छै।
कोढ़ीए ने फुलो-फड़ो संग
बाँहि पकैड़ संकल्प कुदै छै।
बिनु संकल्प जिनगी जेहेन
विवेक बुध विचार कहै छै”

कर्म अर्थात् काज जेकरा काम सेहो कहल जाइत अछि, ओ जखन अपन रूप लैत अछि तँ स्वत: धामक निर्माण होइए। कवि कहै छैथ जे जेहेन कर्म करब तेहेन फल पबैक हकदार हएब। भेटब नहि भेटब केर पाछू आरो-आरो बात सभ अछि जे बेवस्थापर सेहो निर्भर अछिए। मुदा अखन से नहि, अखन कवि जे कहए चाहै छैथ तैपर नजैर देल जाए-

“काम धाम जहिना बनै छै
तहिना ने कर्मो धर्म कहबै छै
धर्मे ने धारण करैत
पथ-पानि चढ़बैत चलै छै।
मीत यौ, देहक पानि...।”

उपरोक्त परिस्थितिकेँ पुष्टिमे कवि आगाँ देखू केना अपन बात रखलैन अछि-

“जेहेन पथ-पानि भेटै छै
तेहने जिनगी हँसि चलै छै।
हँसि-हँसि हँसिया-हँसिया
सौन पूनो चान कहै छै।
सौन पूनो चान कहै छै।”

प्रेमक संग आश भरैत कवि कहै छैथ-

“पथ बीच संन्यासी जहिना
झींक दऽ दऽ जाँत भरै छै।
आस कहाँ संग छोड़ैए
चिक्कस बनि-बनि भूमि भरै छै।”

तेतबे नहि, लाल टमाटर जकाँ जहिना अपन रूपकेँ ओहन लोक अदैल-बदैल अपन गोटी सुतारैक भाँजमे रहैए तेकरा चिह्नित करैत कवि कहलैन अछि-

“लाल टमाटर बनि संन्यासी
खटमीठ रूप धड़ैत रहै छै।
नै मीठ तँ खट्टो नहियेँ
अपन नाव हेला हेलै छै।
अपन नाव हेला हेलै छै।
गीत गीता गाबि संन्यासी
भगवत भजन करैत रहै छै।
सबूर पाबि सबर सबरी
मरितो राम एबे करै छै।
मरितो राम एबे करै छै।” ❑

सरिता

‘सरिता’ पद्य संग्रहक पहिल संस्करण 2013 ई.मे श्रुति प्रकाशन, दिल्लीसँ प्रकाशित अछि। ‘इन्द्रधनुषी अकास’, ‘राति-दिन’, ‘तीन जेठ एगारहम माघ’, ‘सुखाएल पोखरिक जाइठ’ तथा ‘गीतांजलि’ नामक पद्य संग्रहसभ सेहो ओही लाटमे श्रुति प्रकाशनसँ प्रकाशित भेल अछि। ओना, केतेकोठाम ई बात आएले अछि जे श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजीक कुल 27 गोट पोथी श्रुति प्रकाशन, नई दिल्लीसँ प्रकाशित भेल छैन। पाँच वर्ष धरि अर्थात् 2008 सँ 2013 इस्वीक बीच श्रुति प्रकाशन हिनकर पोथीसभकेँ छापलकैन। पछाइत पल्लवी प्रकाशन, निर्मली (सुपौल)सँ मण्डलजीक पोथीसभ प्रकाशित हुअ लगलैन।

श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजीक पद्य रचनाक सन्दर्भमे विदेह-सदेह पत्रिकाक सम्पादक श्री गजेन्द्र ठाकुर कहै छैथ जे पद्यक ई बेछप रूप मैथिली साहित्यमे पहिल बेर आएल अछि-

“जगदीश प्रसाद मण्डलक पद्य प्रश्न उठबैत अछि। कथ्यकेँ देखने अछि, आ निष्कर्षमे प्रश्न अनैत अछि। हिनकर गद्य रचनाक हिसाबे देखी तँ आशासँ बेसी निराशा देखा पड़ैत अछि। पद्य हिनका प्रश्नकेँ बा उत्तरकेँ विश्लेषित करबाक पलखति नै दै छन्हि, तेँ ओ प्रश्न उठा-उठा उत्तर तकबाक प्रेरणा अपन पद्यक माध्यमसँ दै छथि। पद्यक ई बेछप रूप मैथिली साहित्यमे पहिल बेर आएल अछि।”

गामक हालत नीक नहि अछि। हाल-रोजगारक कोनो समुचित उपाय गाममे नहि अछि। ‘भैया यौ परदेश जेतइ’ पद्यमे द्रष्टव्य अछि-

“भैया यौ परदेश जेतइ।
नै छै लज्जैत गाम-घरमे

नै छै चालि बेवहारमे।
बोली-वाणी एक्कोमे नइ छै
नै छै आसे-बिसवासमे।
अहीं कहू भाय, केनाकऽ रहतै
भैया यौ परदेश जेतइ।”

पूर्वमे यएह गाम किछु आर छल मुदा वर्तमानमे बदैल गेल अछि-

“छेलै भूमि कहियो भूमा सन
बास-सुबास सजैत छेलै
देव-दानव मानव बनि-बनि
अरूप-सरूप बनैत गेलइ।
अहीं कहू भाय, केना कऽ टिकटै
भैया यौ, परदेश जेतइ।”

आगाँक कहै छैथ-

“दूर बसि दुर्वासा देखि-देखि
ललकारा ललकारि भरै छइ।
दूर देश दुर-दुर दुरदुरा
अपन पौरुष पाबि कहै छइ।
अहीं कहू भाय, दम केना कऽ अँटतै
भैया यौ, परदेश जेतइ।”

गामक स्थिति बिगड़ैमे मात्र जीविकोपार्जनक साधनक अभावे टा नहि, आनो-आन कारण सभ रहल अछि। गामक समाज टुकड़ी-टुकड़ीमे बँटि गेल अछि। एक-दोसर बेकतीक बीचक बेवहारमे मानवीयताक ह्रास भेल अछि। जेकर अनेको कारण सभ अछि। उक्त प्रसंगमे कविक मन्तव्य अछि-

“आन अपन अपना-अपना
मद बोतल-शीशी भरै छइ।

पीबिते मद मदहोश बनि-बनि
चीन-पहचीन बिसरए लगै छइ।
अहीं कहू भाय, बिसरल मन केना कऽ पड़तै
भैया यौ, परदेश जेतइ।”

कवि अपन बातकेँ एतबेपर नहि रोकि आगू कहै छैथ-

“घोड़ा-हाथी, ऊँट चढ़ि-चढ़ि
रह-राही रणबास चलै छै।
योद्धा-युद्ध सरसिज सिरैज
वीरभूम नाओं धड़बए लगै छै।
अहीं कहू भाय, किए ने रहतै
नै यौ भैया, जेबे करतै, जेबे करतै।”

ऐगला रचनाक शीर्षक अछि ‘ओज ओझरी’। मकड़ा जहिना अपने बनौल जालमे फँसि अपन प्राण त्यागैक स्थितिमे आबि जाइए तहिना बेकतीगत रूपमे मनुक्खो सामाजिक रूपमे गामो-गामक भइये जाइए। अही तरहक बिम्बकेँ इंगित करैत मण्डलजी प्रस्तुत संग्रहक ‘ओझ ओझरी’मे कहलैन अछि-

“ओज ओझर सोझ सोझड़ै
पछुआ पोझर पोझ पकड़लक।
ओज-सोझ सोझर करैमे
सोझर सोझ पोझर पकड़लक।
सोझर सोझ पोझर पकड़लक
पछुआ पोझर...।
घीचि-घीचि पछुआ पक-पकैड़
चढ़ि टिकासन बसन बनौलक
कखनो मुहगर कखनो मुँहचर

चालि चलि सिंघासन मारलक।
चालि चलि सिंघासन मारलक।
पछुआ पोझर...।"

आगाँ आरो स्पष्ट होइत अछि-

"पोझरी ओझरी बनि बिगैड़
सोझरी बाट सोझा भगौलक।
छाती हाथ धड़ धक-धकेलि
पोझर-सोझर सरसिज भगौलक।
पोझर-सोझर सरसिज भगौलक।
पछुआ पोझर...।
अपने रोपल गाछी भुताइ
आकि पोखैर नाओं चढ़ौलक
पोखैर भुताइ आकि गाछी
मन मन्दिर बिस बैस कहलक।
मन मन्दिर बिस बैस कहलक।"

क्रमश: तेसर स्थानपर 'पानि बीच' शीर्षक काव्य अछि। उक्त रचनाकेँ पढ़िते हमरा मोन पड़ि गेल 'नब बनक नब फल'। मण्डलजीक कथाक शीर्षक छी 'नब बनक नब फल'। ऐ कथामे ओ कहै छैथ जे "केहनो कुकर्मी-सुकर्मी, कुपात्र-सुपात्र किए ने हुअए, मुदा मृत्युक समय जँ एकघोंट गंगाजल पिआ दिऐन वा गोदान करा दिऐन, वा मुहसँ 'राम' कहबा दिऐन, तँ हुनका स्वर्ग हेबे करतैन। ऐठाम 'राम'क माने चलैनमे जे राम छैथ से नहि, ओ राम छैथ जिनका महादेवो छिपाकऽ रखने रहला, खाली एक गोटा छोड़ि केकरो नइ कहलैन। जखन स्वर्ग जेबाक एतेक सुलभ रास्ता अछि, तखन जे पाबैन-तिहार, उपास-व्रत, धर्म-धर्मान्तर, तीर्थाटन-देशाटन करैए, से अनेरे ने। स्वर्गक जड़ी जखन मृत्युओ काल भेटि जाइए तखन अनेरे ने लोक देहो आ मनोकेँ धुनैए।

मानव शब्दक प्रयोग दू रूपमे होइए। एक रूप भेल मनुक्खकेँ मानव कहल जाइए से आ दोसर भेल मानव जेकरा मानैए। माने, मनमे बिनु सोचनो-विचारणो मानि लइए आ सोचियो-विचारिकऽ तँ मानले जा सकैए। ओना, नजैर घुमाकऽ देखब तँ दुनू मानबे भेल, किए तँ मनक राजा रहने मानवे ने मानबो करैए, पशु-पक्षी-जानवरसँ लऽ कऽ कीट-पतंग, गाछ-बिरीछ, पोखैर-इनार आकि आन पशु-पक्षी थोड़े मानैए। मुदा कनियेँ आरो आगू बढ़ब तँ देखब जे मदारी सभ दुनूकेँ मनुक्खे जकाँ सिखा-पढ़ा मनुक्खक नकल तँ करेनौं अछिए।

विचार कोनो भाँजेपर ने चढ़ि रहल छल। भीतरे-भीतर मन अपनेमे लड़ितो छेलए आ झगैड़तो तँ छेलएहे। मन घोर-घोर भऽ गेल। एकटा कहए जे पहिने पानि बनल तँ दोसर कहए पहिने समुद्र खुनाएल। पहिने अण्डा भेल आकि चिड़ै? तहिना, दिन-रातिक बँटवारा जखन भेल तखन पहिने रातिकेँ पार भेटलै आकि दिनकेँ.? एक मन ईहो कहए जे भनडारामे गेल रही तँ भजनमे सुनने रहिऐ जे 'दुनियाँक जालमे ओझरेबह बौआ, बँचिकऽ रहिहह हौ..!" उपरोक्त काव्य 'पानि बीच'क लेखन वर्ष 2013 ई. अछि। काव्यमे सेहो यएह बात, यएह उहापोह आएल अछि-

"पानि बीच समुद्र बसल छै
आकि समुद्र पानि कहबै छै?
सजि-सजि साजि सरोवरो-झीलो
तहिना संग सगरो सजबै छै।
पानि-बीच समुद्र बसल छै
आकि समुद्र पानि कहबै छै।
बनि धुआ धुँअकारी बनि-बनि
अकास नील सजबए लगै छै।
धड़-धड़ि धार धड़ि-धड़ि धरती
कमल नील खिलबए लगै छै।
पानि बीच...।"

कवि कोनो प्रसंगकेँ तह धरि जाकऽ स्पष्ट करैक प्रयासमे रहै छैथ। देखू आगाँ की कहलैन अछि-

“बूने-बून बड़-बड़ बनि-बनि
धड़ धरती धन राशि धड़ै छै।
दस दुआरि लक्ष्मी बनि-बनि
अकास-पताल बखान करै छै।”

एतबे नहि, तहूसँ आगाँ परिणामक दिशामे सेहो अपन लेखनीकेँ चलबैत कहलैन अछि-

“मन मण्डल धनमण्डल बनि-बनि
ही पत ही अकसि खसै छै।
मह-महा महि-महि मुखमण्डल
माखन बनि अमृत बसै छै।
पानि बीच...।
कखनो मधु कटि कट कखनो
नम-नम नाम धड़बए लगै छै।
चढ़ि अकास अकैस झकैस
धड़-धरती धन राशि धड़ै छै।”

आ अन्तमे ईहो कहैसँ पाछू नहि हटला जे सुवास-अकास मह महा-महा सिज-सिर समर सजबए लगैए-

“सुवास-अकास मह महा-महा
सिज-सिर समर सजबए लगै छै।
जन-जनि जननी कहि-कहि
अकास गनजन करए लगै छै।
अकास गनजन करए लगै छै।
पानि बीच...।” ❑

गीतांजलि

पद्य विधामे श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक प्रस्तुत पोथी माने 'गीतांजलि', पाँचम कृति छिऐन। मण्डलजीक काव्यधारा अपने-आपमे फराक स्थान निरूपित करैत अछि। जैठामक काव्यधारा मुख्य रूपसँ या तँ भक्तिपरक चिन्तनधारा वा श्रृंगारपरक चिन्तनधारासँ ग्रसित छल, ओना गौण रूपमे प्रकृतिपरक काव्यक संग मिथिलाक पाबैन-तिहार, समाजक रीति-रिवाज धरिमे अपन विकासवादी गतिये चलि रहल छल, तैठाम मानवीय मूल्यकेँ यथार्थपरक रूपमे नव दृष्टिकोण तथा नव-भाव-भूमिक संग मण्डलजी अपन जीवनक क्रियागत-अनुभवक आधारपर काव्यक सृजन केलैन अछि।

प्रस्तुत पद्य संग्रहमे कुल 37 गोट रचना संग्रहित अछि जइमे प्रथम 'हाल-बेहाल' अछि। ऐ रचनाक माध्यमसँ कवि कहै छैथ जे उसर भूमिमे सेहो जखन हाल डगडगाइत अछि तँ नव फूलक सिरजन भऽ जाइ छइ-

"डगडगाएल हाल पाबि उसरक
फूल उस्सर सिरजैत रहै छै।
घूरि ताकि नै भरमए भौरा
दिवा रसराज कहबैत रहै छै।
हाल-बेहाल देखि रंग राही
कुशल फूल...।"

कवि कहै छैथ जे केहनो परिस्थितिमे शीलकेँ नहि छोड़बाक चाही मुदा वर्तमानमे शीलक स्थिति देखि हंस कानि कऽ कहि रहल अछि-

"शीला शील देखि-देखि
हंस कानि कहैत एलैए।

एक शील श्रृंग चढ़ि-चढ़ि
दोसर श्रृंगार बनैत एलैए।
शीला शील देखि-देखि
हंस कानि...।"

भावक अभाव भेलासँ कुभाव बनि जाइत अछि आ कुभाव बनि प्रेम गीत लिखाइत रहैत अछि-

"भाव-अभाव कुभाव बनि-बनि
गीत प्रेम लिखाइत रहै छै।
रंग सियाही रोशनाइ बनि-बनि
रेहे-रेह सियाह घोड़ाएल छै।"

दिन घटैत अछि आ राति चलि अबैत अछि। दिन-रातिक क्रमसँ मौसम सेहो बदैल जाइत अछि। दिन-रातिक चलैत-बदलैत ई क्रम वर्षमे परिवर्तित भऽ जाइत अछि। अहिना प्रकृतिक लीला सेहो बदलैत रहैत अछि-

"दिन घटतै कि राति यौ भैया
मौसम मुस्की दइ छै
साले दिनक समैये केते
रंग लीलाक बदलै छै..।"

तालक संग ताल मिलि बेताल भऽ जाइत अछि आ बाँहि पकैड़ आवाज सेहो भरि रहल अछि। तेतबे नहि, तन-मनसँ उठैत आगि देखि छातीमे मुक्का मारि कहैत अछि-

"उठिते आगि तनैक मन
मुक्का छाती मारि कहै छै
ताल-ताल मिला बेताल
संग बाँहि आवाज भरै छै।
उठिते आगि तनैक मन

मुक्का छाती मारि कहै छै
मुक्का...।”

हे कौआ छप्परपर बैसल किए कुचड़ै छह। लग आबि नैहराक हाल-चाल, परिवारो आ गामो-समाजक सोखर सुनाबह-

“छप्पर किए कुचड़ै छह हे कौआ
छानिपर किए बैसल छह।
लग-आबि समाद सुनाबह
नहिराक सोखैर गाबि सुनाबह
भैया-भौजीक हाल-चाल संग
गाम-समाजक हाल सुनाबह।
छानि किए कुचड़ै छह हे कौआ
छानिपर...।”

‘गामसँ किए डरै छी’ गीतक माध्यमसँ प्रवासी लोककेँ सचेत करैत कवि कहै छैथ जे एक दिस अपन बाप-पुरुखाक पुरुषार्थक गीत गाबै छी आ दोसर दिस गामसँ डरे शहर दिस किए भागि रहल छी-

“बाप-पुरुखाक पुरुषार्थ गाबि-गाबि
छाती-तानि हामी भरै छी
नानी-दादीक खिस्सा-पिहानी
सुना-सुना मोहैत रहै छी
तखन किए गाम बिसरै छी
गामसँ किए डरै छी
भाय यौ...।”

अन्हार आ इजोत जिनगीक दुनू पक्ष अछि। जे जिनगी संगहि-संग चलैत रहैत अछि। दुखक सागरक बिच्चेमे सुखक सागर सेहो रहैत अछि, जहिना एक्के मासमे अमावसिया आ पूर्णिमा रहैत अछि-

“दोहरी पक्ष जिनगी चलै छै
अन्हार-इजोत कहबै छै।
दुखसागर बीच सुखसागर
अमवसिया पूर्णिमा कहबै छै।
एक्के मासक दुनू पक्ष छी
बुझैक फेर चलैत एलैए
बेढ़ब गीत गबैत एलैए
बेढ़ब गीत...।”

जे बेकती अपमान आ मानक भेदकेँ बिसैर जाइत अछि ओ सुरधाम दिस चलि जाइत अछि। ऐ प्रसंगमे कवि ‘संग जिनगी’ गीतक माध्यमसँ कहै छैथ-

“मान-अपमान भेद भुलि
संग मिलि सुरधाम चलै छै।
घाट-बाट अटैक-मटैक
हारि जीत गुणगान करै छै।
हारि जीत गुणगान करै छै।
संग जिनगी...।”

‘सबहक जिनगी’ गीतक माध्यमसँ कहै छैथ जे सबहक जिनगी गीत गबै छै, ओ गीत नहि बल्कि सुख-दुख कहै छै-

“सबहक जिनगी गीत गबै छै
गीतक संग सुख-दुख कहै छै।
केकरो सुखाएल सुख
तँ केकरो दुखाएल-सुखाएल कहै छै।”

कवि कहै छैथ जे सबहक जिनगीकेँ अपन-अपन तानी-भरनी होइछ जे समयक संग परीक्षा दैत चलैत रहैत अछि-

“पकैड़ तान सभक जिनगी
घड़ी परीक्षा दैत चलै छै।
तीत-मीठ गढ़ि-गढ़ि, मढ़ि-मढ़ि
दिन-राति कहैत चलै छै..।”

‘पकैड़ पग’ गीतक माध्यमसँ कवि कहए चाहै छैथ जे प्रेमक पहुँची पकैड़ आगूक पथपर पग-पग चलैत चलू-

“पकैड़ पग पएरे-पएरे
पग-पग पथ पकड़ैत चलू।
पकैड़ प्रेम पहुँची पकैड़
संग जिनगीक चलैत चलू।
संग जिनगीक चलैत चलू।
पकैड़ पग पएरे-पएरे पकैड़...।”

ऐठाम केकरो सञ्च-मञ्च कहाँ रहए दैत अछि। चिड़चिड़ी छीटि कऽ टिकमे ओझरी लगबैत रहैत अछि। रंग बदैल-बदैल एक-दोसरापर सियाही फेकैत रहैत अछि-

“रंग-सियाही बदैल-बदैल
आँखि इजोत बदलैत रहैए।
यार यौ, संच-मंच रहए कहाँ दइए।
भजार यौ...।”

बाढ़िक प्रलयकारी वातावरणमे सेहो मण्डलजीक चिन्ता मानवीय सरोकारेक छैन। कहै छैथ- कानि-कलैप के केकरा कहत, सभ अपनहि दुखसँ दुखित अछि..! के सुनत केकर बात, अपनहि सभ वौड़ा गेल अछि..! उक्त भावकेँ निम्न पाँतिमे देखल जाए-

“कानि कलैप केकरा के कहतै
अपने बेथे सभ बेथा गेल।

के सुनत केकर नचारी
अपने मने सभ वौड़ा गेल।
अपने मने सभ...।”

चीनीक चोर जिलेबी चीनीकेँ चोरबैत-चोरबैत चीनीक बोरमे डुमि कऽ मरि जाइत अछि-

“रस रसिया रस रचि-रचि
रसे-रस रसिआइत रहै छी
चीनी-बोर जिलेबी जहिना
बिनु ओर-छोरे डुमि मरै छी
बिनु ओर-छोरे डुमि मरै छी..।”

मीत यौ, मात्र अहींटा केँ नहि कहै छी गहवरक बीच गुहारि सेहो करै छी-

“मीत यौ, अहींकेँ कहै छी
गहबर बीच गुहारि करै छी।
दिशा चारू फेकि फूल
शंख अकास फूकैत रहै छी
देव-दानव-मानव कहि-कहि
अकास शंख फूकैत रहै छी
मीत यौ, गहबर बीच गुहारि करै छी।”

अजीव-अजीव खेल चलि रहल अछि, ई खेल नहि बल्कि खाली खाली मन भरल जा रहल अछि-

“अजीब-अजीब खेल चलै छै
खाली-खाली मन भरै छै।
अजीब...।”

हाल विकराल बनल अछि। मुँहगर-कन्हगर लोकक बीच केकरा के

देखत-सुनत? तँ हारल-मारल हेराएल चलि रहल छी-

“हाल-गाल विकराल बनल छै
मुँहगर-कन्हगर बीच पड़ल छै
के केकरा देखतै-सुनतै
हारल-मारल हेराएल चलै छै।”

जैठामक प्रजातांत्रिक सत्ता केन्द्रीकरण भऽ संचालित-प्रसारित होइत अछि तैठामक जनगणक स्वरकेँ कवि प्रस्तुत पद्यक माध्यमसँ कहै छैथ जे कखनो दौड़ैत तँ कखनो ठमकैत आशाक केर आश धेने घिसियाइत चलि रहल छी-

“कखनो दौड़, कखनो ठमैक
आशा-आश घिसियाइत चलैए
सतरंग गीत गबैत चलैए।”

बाल आ जुआनी, चित्त आ चेतन सभटा हेरा गेल..! बाढ़िक विभिषिकासँ त्रस्त भऽ कवि लिखै छैथ-

“बाल दहा जुआनी जुड़ि-जुड़ि
चित्त चेतन सेहो हरा गेल
मित यौ, बाढ़िमे सभ किछु दहा गेल।”

असली वानिकेँ अर्थात् असली चालिकेँ छोड़ि जे कुवानि धरत माने कुचालिकेँ पकैड़ कऽ चलत तँ ओ भ्रममे भरमैत रहत। ...उक्त भावकेँ कवि ऐ तरहेँ व्यक्त केलैन अछि-

“बानि छोड़ि कुबानि पकैड़
चीज-बौस बनबै छी।
भरैम भरम भरि-भरि
भरमैत किए रहै छी।
निरमोही बौआ...।”

'अपना गतिये' शीर्षक पद्यक माध्यमसँ कवि कहै छैथ जे जिनगी तँ एकटा परीक्षा छी, जेकरा सभकियो अपना गतिये पग-पग परीक्षा दैत जिनगी चला रहल अछि-

"अपना गतिए सबहक जिनगी
पग परीक्षा दैत चलै छै।
तीत-मीठ सुआद सिरैज
राति-दिन कहैत चलै छै।
पग-पग परीक्षा दैत चलै छै।"

जैठामक प्रीतक रीति कुरीत बनि गेल अछि, कुरीतकेँ सुरीति केना बनाएब आ जैठाम घर-दुआरि थाल-खिचार बनल अछि ओइठामक कल्पनाक कल्पवृक्ष केना रोपब-

"प्रीतिक रीति कुरीत बनल छै
रीति-सुरीति केना बना पेबै।
थाल-खिचार घर-द्वार बनि
वृक्ष कल्प केना रोपि पेबै।
हे बहिना हे संगी, हे प्रेमी
सुरत केना बदलबै
हे बहिना...।"

सुखक जे धारा अतृप्त होइत अछि ओइ धारामे जिनगी भँसिया गेल अछि आ मन कलपैत-कलपैत कानि रहल अछि-

"सुक्खक अतृप्त धारमे
भँसिया गेलै जीवन।
भँसि-भँसि भँसिया भँसिया
कानि-कलैप कहैए मन।"

कवि ओहन बेकतीकेँ, जे ठकि-फुसिया पनिया कऽ अनका जिनगीक

संग खेल खेलाइत अछि, नढ़ड़ा हेल हेलैत रहैत अछि। ओहन बेकतीकेँ सचेत करैत कहै छैथ- अहाँ अनका नहि, अपनहि जिनगीक संग खेलै छी-

“नढ़ड़ा हेल हेलै छी, भाय यौ
नढ़ड़ा हेल हेलै छी।
ठकि-ठकि, फुसिया-पनिया
जिनगी संग खेलै छी, भाय यौ
जिनगी संग खेलै छी।
नढ़ड़ा हेल...।
जुग छल जमाना छल
कलैप कूश ने लागै छेलै
सोझ-साझ फुलैक-फलैक
चालि खिखिर धेने छेलौं।
चालि खिखिर धेने छेलौं।
नढ़ड़ा हेल...।”

असमानताक भेद-भावकेँ देखि कवि क्षुब्ध भऽ गेल छैथ तेँ कहै छैथ- चलू उचितपुर देश जैठाम सबहक सभ किछु समान होइक अर्थात जेतए समानताक भाव होइक-

“चलू उचितपुर देश
यौ-भैया चलू उचितपुर देश।
नै अछि भेदभाव ओतए किछु
नै अछि चोर-बैमान।
नै अछि ऊँच-नीच किरदानी
सबहक एक्के भेष।
सबहक एक्के भेष।

चलू उचितपुर...।

सबहक चालि-ढालि एक्के

अछि सबहक मान-समान

मन-मनुख बनि-बनि सभ

भरैए सूर-तान, यौ भैया

भरैए सूर-तान

जेहेन देस तेहेन भेष

चलू उचितपुर...।

आगि-पानिक भेद कोनो नै

सबहक एक्के उदेस।

पढ़ै-लिखैक एक्के रस्ता अछि

सबहक एक्के सनेस।

चलू उचितपुर...।”

आशाकेँ जिनगी कहल जाइछ मुदा ओइ आशापर पानि फेरि गेल अछि। मुदा हारि केना स्वीकार करब, तेँ आशाक डोर पकैड़ पाछू-पाछू घिसियाइत चलि रहल छी-

“गामेमे हराएल छी

रंग-बिरंग अन्न-पानि

नीकसँ छिड़ियाएल छी।

नीकसँ छिड़ियाएल छी।

कानि कलैप केते कहब

..तैपर पानि फेराएल छै

तैयो आशक डोर पकैड़

पाछू-पाछू घिसियाएल छी।

कानि कलैप केते कहब”

हँसैत, गबैत, नाचैत कहुना अहाँक दुआरि पहुँचबे करब मुदा मकरजालक फाँस तँ रहबे करत-

“हँसैत, गबैत, नचैत, भसैत
पहुँचब तोर दुआरि
मुदा, फाँस फँसि मकरजालमे
मेटा गेल सभ चौपाड़ि
हे मइये...।”

जहिना वंशी पानिक मध्य घात लगौने रहैत अछि आ बोरक गन्धसँ शिकार फँसि जाइत अछि तहिना वर्तमान कालखण्डक स्थिति अछि, ऐ प्रसंगमे कवि कहै छैथ-

“तिनकमनिया बंशी बनि-बनि
पानि बीच घतिया पड़ल छै।
गन्ध बोर सुगन्ध कहि-कहि
मुँह मध्य अवघात बनल छै।
घात लगौने घात लगल छै।”

जइ बेकतीकेँ नमहर टाँग छै आर्थात् जनिक आधार पैघ छैन वएह आड़ि-धूर (बाधाकेँ) टपि सकैत अछि-

“देहमे नमहर टाँग जेकर
आड़ि-धूर वएह कुदि टपै छै।
टपि टपान हाथो कहैत
राही राह पकैड़ चलै छै।
देहमे नमहर टाँग जेकर
आड़ि-धूर...।” ❑

सुखाएल पोखरिक जाइठ

'सुखाएल पोखरिक जाइठ' अर्थात् श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक 6म पद्य संग्रह। मण्डलजीक जहिना गद्यक संसार व्यापक छैन तहिना पद्यक संसार सेहो व्यापक छैन। उक्त संग्रहमे कुल 36 गोट पद्य संग्रहित अछि। पहिल पद्य-रचनाक शीर्षक अछि 'केकरो फूल'। मण्डलजीक कोनो रचनाकेँ जखन अहाँ पढ़ब तँ ओकर वातावरणमे अहाँकेँ प्रकृतिक रूप अबस्से देखबामे औत। प्रकृतिमे अद्भुत चीज सभ अछिए। प्रकृति अपने अद्भुत अछि। तँए ने, जेतेक पेड़-पौधा, जीव-जन्तु, कीट-पतंग इत्यादि अछि, जे प्रकृति प्रदत्त अछि, ओकरा जखन धियानसँ देखै छी तँ अद्भुत बुझि पड़ैए। सबहक अपन-अपन जीवन, अपन-अपन क्रिया, अपन-अपन गुण, अपन-अपन सोभाव अछि। चाहे ओ पेड़-पौधा हुअए कि जीव-जन्तु आकि कीट-पतंग आदि-इत्यादि। मनुक्ख सेहो ओहीमेसँ एक अछि। मनुक्खो एक प्राणी छी। जे सभसँ भिन्न अछि। मनुक्ख विवेकशील प्राणी अछि। मनुक्खेमे ओ गुण अछि जे सबहक माने सभकथुक अध्ययन आ मनन सेहो करैत रहल अछि। मनुक्खमे सेहो रंग-बिरंगक चालि-प्रकृति देखल जाइत अछि। आ से ओहिना जहिना पेड़-पौधाक बीच अछि। प्राय: पेड़-पौधा जे फड़ैए ओ पहिने फुलाइए। माने फूलक पछाइत फल लगैए। मुदा एहनो पौधा तँ अछिए जे पहिने फड़बे करैए पछाइत फुलाइए, जेना मकइ। आ ओहनो अछिए जे फड़बे करैए आ फुलाइत अछिए ने कहियो। जेना गुल्लैड़। तहिना कटहरक गाछमे फूल-फड़क बीच कोनो मिलाने ने देखबै, माने फूल (मोछी) केतौ आ फल केतौ। तैसंग बहुतो एहेन पौधा अछि जे पहिने फुलाकऽ फुलहैर जाइए पछाइत फड़ैए। फड़ैयोमे विविधता अछि। बहुतो चीज मात्र एक सिजिन भरि फड़ैए, बाँकी समय ओहिना रहैए। आ बहुतो पौधा सालो भरि फड़ैए, माने नियमित (निरन्तर) फुलेबो करैए आ फड़बो करैए। जेकरा

बरहमसिया कहै छिऐ। मुदा ऐठाम से नहि, ऐठाम कवि मकइक वर्णनमे सामाजिक विसंगतिकेँ रेखांकित करैत कहै छैथ-

“केकरो फूल मोँछ बनै छै
तँ केकरो फूल फुलहैर जाइ छै।
फुलैक फूल फुलिया-फलिया
हस-हँसि दुनू दिस बढ़ै छै।
हस-हँसि दुनू दिस बढ़ै छै।
केकरो...।”

मुदा गुल्लैर सेहो एक पौधा अछि जेकर फूल आइ धरि कियो ने देखि सकल अछि। ओहो फड़िये जाइए। कवि कहै छैथ-

“केकरो फूल अलोपित भऽ भऽ
सत-सत हाथी ताकि थकै छै।
फूल गजनती गज-गज गजुआ
बाट-बटोही हारि थकै छै।
बाट-बटोही हारि थकै छै।”

गुल्लरिक दूध सोइरीबला बच्चा लेल जिनगी बनि जाइए। देखू कवि अपन अनुभवात्मक ज्ञानकेँ अपन पद्य-रचनामे कोन तरहेँ व्यक्त केलैन अछि-

“जेकर दूध छाल छलही बनि
आनि जम जजमान गढ़ै छै।
बाल-बोध मुँह अमृत बनि
अरोग जीत जिनगी पबै छै।
अरोग जीत जिनगी पबै छै।”

अपन इलाका बाढ़ि प्रभावित इलाका अछि। सरकारसँ लऽ कऽ बेकती धरि बाजएकालमे बाजि दइए जे वर्षा-बुनीक चलैत ऐठामक खेती-पथारी चौपट्ट

भेल अछि। मुदा सुखाड़ सेहो होइते अछि। माने दुनू मौसम अछिए। आब सवाल उठैए जे मानि लेलौं चारि मास माने एक मौसम बाढ़ि-पानिक रहल। मुदा सालमे तँ बारह मास होइए किने। बाँकी जे आठ मास रहल तइमे किए ने किसान अपन काजक पसार कऽ सकै छैथ। करैबला करबो करै छैथ आ करैत-करैत गीतो गबै छैथ-

“काज पसैर अबिते अँगना
लप-लप लक्ष्मी आबए लगै छै।
लछ-लछ लक्ष्मी कुदैक-कुदैक
शर सिर कमल सजबए लगै छै।
शर सिर कमल सजबए लगै छै।”

क्रमकेँ आगाँ बढ़बैत-

“सजि-सजि सजिते सिर श्रृंगार
बाणी वीणा आबए लगै छै।
बाणी तनि भरैन-पुरैन करैत
काशी कमल खिलबए लगै छै।
काशी कमल खिलबए लगै छै।”

अहाँ अपन कर्म करैत जाउ, समयकेँ बुझि जखन अहाँ चलैत रहब तँ प्रसून रस अहाँमे रसा जेबे करत-

“कुदि-कुदि काज कर करिआ
वृक्ष सरूप सजबए लगै छै।
अशोभ शोभ अलिसाइत अलि
प्रसून रस रसबए लगै छै।
प्रसून रस रसबए लगै छै।”

समाजमे दोहरी चरित्रबला मनुक्ख सभ दिनसँ रहल छैथ। ई बात अलग जे हुनका मनमे ई सदैव होइत रहैन छैन जे हमर बात (चलाकी) कियो ने बुझि

रहल अछि। कहबाक माने जे एहेन सभदिनसँ होइत एबे कएल अछि जे जिनकर जेहेन जिनगी ओ तेहने बात बाजि-बाजि अपन परिचय दैत एला अछि। जँ वाणीक विपरीत किरदानी रहल तँ ओहो एक जिनगी भेबे कएल। माने, बाजब किछु आ करब किछु, अर्थात् गप-सप्पक दौड़मे प्रगतिशील आ बेवहारिक जीवनमे रूढ़पन रहल। मुदा ईहो तँ सभसँ कहले जाइए जे चोर अपन चोरिक निशान स्वयं किछु-ने-किछु छोड़ि दइते अछि। अही तरहक बिम्बपर लिखल, प्रस्तुत संग्रहक ऐगला रचना अछि। जेकर शीर्षक अछि 'धार बीच'। उक्त रचनामे कहल गेल अछि-

"जएह जिनगी सएह किरदानी
सभ दिन सभ बाजि कहै छै।
धरम-अधरम कुधरम बूध-रम
पतरहाँसि हँस-हँसैत कहै छै।
पतरहँसि हँस-हँसैत कहै छै।"

मुदा कोनो छपित नहियेँ रहैए ने, देखू आगू की कहलैन अछि-

"झूठ-फुस एक्कोटा नै
मुँह फोड़ि-फोड़ि कहै छी
कखनो ठोर बर-बरी बनि
दालि सिर चढ़ि-चढ़ि कहै छी
दालि सिर चाढ़ि-चाढ़ि कहै छी।"

तेतबे नहि, बोलीमे सभ किछु अपनहि साफ भऽ जाइत अछि-

"रस-रसा रसाएल जेना
रब-रब रभैस कहै छी।
रभसी रभैस रम-रमा
मरा राम मरा कहै छै।"

वास्तविकता एक-ने-एक दिन सभक सोझामे आबिए जाइत अछि-

“चोरकट चालि पकैड़-पकैड़
चोरकट चालि चलैत रहै छी
बाल देखि बोली बिलैह
चोरकट समाज गढ़ैत रहै छी।
चोरकट समाज गढ़ैत रहै छी।”

एक्की-दुक्कीकेँ ताकब आसान नहि होइत अछि मुदा जैठाम बहुसंख्य ओहने रहल तैठाम तँ से नहि होइत अछि। ओहनठाम चोरकट चालि आसानीसँ देखबामे आबि जाइत अछि-

“एक्की-दुक्की गंजक-गंज
चीरक समाज बनबैत रहै छी।
साज सजि सजनी सन्हिया
चढ़ि-चढ़ि सिर सजैत रहै छी
चढ़ि-चढ़ि सिर सजैत रहै छी।”

गप-सप्पक दौड़मे ने उन्टा-पुन्टा चलि सकैए। माने उनटलो चीजकेँ सुनटलक भान करौल जाइए। मुदा काजक दौड़मे से नहि होइत अछि। ओ बेवहारिक दौड़ होइए किने, ऐठाम तँ काजे उनैट जाएत। जे चीज जइ रूपमे प्रत्यक्ष रहत, ओइठाम कोनो तर्क थोड़े काज करत। ओ उनटल काजे ने अपन बात बाजत। तँए, बेवहारिक जीवनमे सभकिछुक वास्तविक परिचय भइये जाइए। जनिक मुँह-कान जेहेन रहल, हुनक ओहन परिचय बनए लगै छैन-

“रूप अरूप सरूप गढ़ि-गढ़ि
रंग रंगि रभसए लगै छै।
मुँह-कान जेहेन-जेहेन

नाओं अपन सिरजए लगै छै।”

पता-पती पसैर-पसैर जिनगीक राग भरमए लगैए-

“पता-पती पसैर-पसैर
जिनगीक राग भरमए लगै छै।
अपन-अपन जिनगीक किरदानी
शूर गलगल गबए लगै छै।
शूर गलगल गबए लगै छै।”

मुदा जखन एना डुमा-डुमी खेल चलैत रहल तखन धरा-धामकेँ केना टपि पेबइ। अन्हार घर साँपे-साँप तखन पार केना करबै-

“अन्हार डुमि-डुमि डुबैक
हँथोरि हाथ केना पेबै?
के केमहर दहैल भँसिया
बीच अन्हार केना देखबै?
बीच अन्हार केना देखबै?”

सामाजिक संसाधनकेँ बेकतीगत विकासमे लगा लेब, पैघ गलती होइत अछि। हरसट्ठे ऐपर सबहक नजैर नहि जा पबैए, मुदा सघन-समीर अकास ठेकि नाद-शंख केना चढ़बै, ईहो तँ सबहक बीच अछिए। कवि कहै छैथ-

“कुम्हारक किरदानी केहेन
कचिया-पकिया मिला गढ़ै छै।
कचिया घोड़ा रमि रेमंत
आउ, टिक, आउ-टिकटिकबै छै।
छाती चढ़ि मुकिया-मुकिया

कान पकैड़ पुछै छै।”

जिनगीक ताक ताकैमे जिनगीए लगा देलिऐ मुदा तैयो सबेर पाबैमे गम-गम जान गमा देलिऐ-

“रेहे-रेह राह रहियाबे
राहे-राह सहजन देलिऐ।
तैयो बात-घाट घटि-घटि
घटिया घाट घटैत गेलिऐ।
घटिया घाट घटैत गेलिऐ।”

घटि-कुघटि मन सजि-साजि नचार-विचार सुनैत गेलिऐ-

“समरथ जिनगीक अवस्था
समरथाइ कहबैत गेलिऐ।
बिनु सामरथे समर्थ बनि
रोग-वियाधि पबैत गेलिऐ।
रोग-वियाधि पबैत गेलिऐ।” ❑

सतबेध

'सतबेध' सतबेध शब्दक अर्थ बेस व्यापक अछि। सत्यसँ घेरब माने सत्यक घेर अर्थात् जहिना बाँसक बनौल बत्तीक घेर बना कोनो नबगौछलीकेँ घेरल जाइए, खास करिकऽ जखन ओ रोपल जाइए, लगौल जाइए। वएह घेर। माने सत्यक घेर। मुदा ऐठाम से सभ नहि, ऐठाम बस एतबए जे श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक काव्य संसारक सातम कृतिक नाओं अछि -सतबेध।

सतबेध पद्य संग्रहमे मण्डलजीक विभिन्न विषयपर लिखल 31 गोट पद्यक सङ्कलन भेल अछि। जेना, 'अपन बल', 'जीवन धार', 'लाजे मेटा गेल', 'खढ़ पोस पानि', 'परता माटि', 'शिकारी', 'जीवन', 'जिनगीक बीच जिनगी', 'दिन रातिक खेल' सँ लऽ कऽ 'हे दुनियाँ केर भाग-विधाता' आ 'कलेससँ कलैशते भैया' धरि।

पहिल काव्यमे कहल गेल अछि जे अपना बलेँ जहिया जीअब बलगर जिनगी तहिया पेबब। अर्थात् अपन कल-बल जहिया अपने हएत तहिया अपन जीवन पाबि सकब।

मनुक्खकेँ सभसँ पहिने बुधि-अकिल सिरजए पड़ै छै। जखन मनुक्ख बुधिगर होइए कि अपने-अपन ओकर बुधि सिर चढ़ि कऽ कहए लगै छै। बाबा साहेब भीमराव अम्बेदकर सेहो कहलैन जे सभसँ पहिने अहाँ शिक्षित बनू। खास कऽ पिछड़ल-पछुआएल लोकक लेल तँ सभसँ सुलभ ओ अनिवार्य रास्ता शिक्षिते बनबकेँ कहल गेल अछि। बाबा साहैब भीमराव अम्बेदकरजी वा आनो-आन महामानव जे कियो भेला आ ओ जे कहलैन। मुदा जे कहलैन ओ मोट रूपमे कहलैन। 'शिक्षित बनू' आब एही शब्दक मानेकेँ देखियौ। प्राय: लोक शिक्षित बनैक माने तँ यएह ने बुझै छैथ जे बीए-एमए केर डिग्रीए भेल

ओकर निशानी। वास्तवमे देखबै तँ अछिओ सएह। सामुहिक/सामाजिक रूपमे, अर्थात् सरकारक घरमे तँ वएह ने शिक्षित, काबिल, काज करै जोग बेकती आ होशियार भेला जे बीए-एमए केने छैथ, जिनका लग डिग्री छैन। मुदा, जगदीश प्रसाद मण्डलजी अपन रचनामे मोट बात नहि कहि जड़िक बात कहलैन अछि। ओ कहै छैथ जे सभसँ पहिने अहाँ अपन बुधि, अपन अनुभव आ अप्पन तागतकेँ चिन्हू। किएक तखनहि अहाँकेँ बलगर जिनगी प्राप्त भऽ सकत। आ अपना पैरपर ठाढ़ भऽ सकब। एकर माने ई नहि भेल जे सरकारी नौकरीकेँ कवि अपना पएरे ठाढ़ हएब नहि मानलैन अछि। मानि लिअ अहाँ प्रोफेसरीमे बहाल भेलौं, अपन डिग्रीक बलेँ भेलौं। मुदा जँ डिग्रीक संग बुधिक बल अहाँकेँ अप्पन रहत तँ प्रोफेसर रहितो किरानीक काजमे लगा कऽ अहाँकेँ कियो नहि ओझरा सकत। देखू 'अपन बल'क माध्यमसँ कवि की कहै छैथ-

"अपना बलेँ जहिया जीअब
बलगर जिनगी तहिया पेबब।
अपन कल-बल जहिया अपने
तहिया अप-अपन जीवन पेबब।
तहिया अप-अपन जीवन...।
बलो की ओहिना अबै छै
बुधि-कल सिरजए पड़ै छइ।
बुधिकल सिर सीर पकैड़
सिरचढ़ि कहए लगै छइ।
सिरचढ़ि कहए...।"

जेकरे घर सएह बेघर अछि। किसानकेँ कहै छैथ किसान भैया, जेकरे देश सएह परदेशी बनल अछि-

"भैया किसान जेकरे देश
सएह परदेशी बनल छइ।

स्वदेश वस्त्र वस्त्राभूषण

सभ दिन कहल करै छइ।

सभ दिन कहल...।”

एक दिस किसानक देशे छी भारत आ दोसर दिस किसानेक दशा केहेन अछि.! एना किए अछि? एना अहू दुआरे अछि जे बिनु पढ़ल-लिखल लोकक हाथमे किसानी रहि गेल अछि। माने पढ़ल-लिखल लोक ओ काजसँ अलग रहि आन काज करै छैथ। बँचल लोकक हाथमे किसानी रहि गेल। बुझिते छिऐ मुँहदुबरा-बौहु सबहक भौजाइ...। मुदा जगदीश प्रसाद मण्डल स्वयं किसानी जीवन धारण कए जीवन जीबैबला रचनाकार, साहित्यकार रहला अछि। सभ दिन पिछड़ल-पछुआएलक चिन्ता हिनका रहलैन अछि। हिनकर जहिना लेखनमे इमानक धर्मिताक पालन होइ छैन तहिना बेवहारिक जीवन सेहो पूर्ण इमानक संग चलैत रहलैन अछि। मण्डलजी लेखन क्षेत्रमे जखन एला तँ आन लेखक जकाँ नहि जे भरि दिन भूतेमे वौआएल अपनो रहै छी आ लोकोकेँ वौआबए चाहैत रहलौं। आवश्यक आवश्यकतासँ बिमुख करब, की पूर्ण इमानदारी भेल। हमरा सबकेँ आजुक जीवन आजुक साहित्यपर विचार करबाक चाही। ओहन लोककेँ मण्डलजी नीक जकाँ चिन्है छैथ। मुदा हुनका सभ संग थुक्कम-फज्झैतीमे रहि किसानक संग रहि किसानक परिचय, किसानक संग शोषण आ दोहनकेँ चिह्नित करैत, समयसँ पहिने चेत किसान सेहो लिखैत रहला अछि।

देखू आगाँ की कहै छैथ-

“अपन सिर कहिया झँपन-झपत

मनो ने सुगबुगा कहै छह।

मन सुनगुन जा नइ औतह

ताधैर सुतल सुतले रहबह।

ताधैर सुतल...।”

तेतबे नहि, एकतामे सेहो बल होइत अछि तहू दिस इंगित करैत कहै

छैथ जे अपनाकेँ जगबैत जागह.., द्रष्टव्य अछि-

अपनाकेँ जगबैत जागह
अपन मन आहूत चढ़ाबह।
अपना-अपनी, अपना-अपना
माघ गंग नहान करह।”

ऐगला रचनाक शीर्षक अछि, ‘जीवन धार’। कवि कहै छैथ जे सतदल समतल बीच धरा अछि, तैबीच एक दल, दू दल बनि-बनि सतदल धारक सिरजन होइए आ घरे-घर जातिये-जातिक संग टोले-टोल बटमारि करैए। अपना अपनी अपना पाछू दिन-राति घटमारि करैए। मण्डलजी कहै छैथ जे समाजक बीच हम आकि अहाँ-हमरा बीच समाज बसैए। कियो अपनाकेँ कहि समाज शील-सुशील समाज कहबैए। मुदा तँए की कुशीलो-शील अपनाकेँ अनभुआर कहैए? नहि, कुशील-सुशीलक बीव कुवेद अपन हाथ ससारि-ससारि की कहैए से देखू-

“जे हँसैत पानि पनिवट पेब
से शील-सोभाव गुण-गान करै छइ।
हँसि-कानि कि कानि हँसि से
शील-गुण सिर्जमान करै छइ।
शील-गुण सिरजन...।
शील-शीला श्रीखण्ड बनि
शील-गुण सिर तानि कहै छइ।
बिनु शील गुणे धार ओहने
बलुआ मरा मुर्दघाट बनै छइ।
बलुआ मरा...।”

मीत यौ, लजबिजी बनि-बनि लजे-लज विरहाइत गेलौं। कहियो विरह

वेद बुझि तँ कहियो विरहे रसा गेलौं। रसल-भसल पछुआ पछाइत उनैट जखन देखलौं तँ पछुआ तालपर नजैर पड़ल। अपन हाल बेहाल बुझि आनक खुश-हाल देखलौं। उक्त बिम्बपर मण्डलजीक वानगी द्रष्टव्य अछि-

"लाज काज संग काज लाज
दुनू लाजे-लाज चलैए।
एक-दोसरकेँ निरलज कहि
अपने निड़जल बनैत कहैए।
आँखिक बीझ मेटा गेल
लाजे मरा गेल, काजे मेटा गेल
रसि-रसि, भसि-भसि
ओर-छोर बिनु घटिया पेलौं।
राम रमैया आकि सीता रमैया
अखन धरि बुझबे ने केलौं
विचारे हेरा गेल, लाजे मेटा गेल।
खिआइत-खिआइत खिआ, मीत यौ
मनसम्फे मन खिया गेल।
सुलाज-कुलाज बीच जिनगी
भुखक-लाजे भूखे मेटा गेल।
लाजे हेरा गेल, लाजे मेटा गेल।"

'खढ़ पोस पानि' शीर्षक काव्यमे कवि समयक चरचा केलैन अछि। ओ कहै छैथ जे समय तँ समैये छी, किनका पुछबैन समैयक हाल। सभ अपने हाले हला आ मने-मन होइछ पेमाल-

"एक तँ बरखा मास ठकैए
खढ़ पोसा अगिमुत्तू करैए।

सामी-कौनी लतड़ा-चतड़ा
खेतक उपजा दहन करैए।
खेतक उपजा...।”

अगिलह आगि लग-लग लगा नरम-नरम घास कहबैए। अगियाह-नरम रहितो मुदा खेतक उपजा दहन करैए-

“गेल किसनमा खेत डहिया
घर-वार उसरन करैए।
देशी भाय परदेशी बनि-बनि
हाल-चाल किसान पुछैए।
हाल-चाल...।” ❑

चुनौती

'चुनौती' पद्य संग्रह 2019 इस्वीमे प्रकाशित अछि। श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजीक ऐ पोथीमे 27 गोट रचना सङ्कलित अछि। उक्त विधामे मण्डलजीक ई आठम कृति छिऐन। ओना, 'रहसा चौरी' नामक पद्य संग्रहक प्रकाशन वर्ष सेहो 2019 इस्वी अछि। मुदा जगदीश प्रसाद मण्डलजी मुख्य रूपसँ गद्यकारक रूपमे चर्चित छैथ। अत: पद्यसँ बेसी हुनक गद्य कृतिसभ प्रकाशित होइत रहै छैन। 2019 ई.मे हुनक अनेको कथा संग्रहसभ प्रकाशित छैन, जेना- 'खिलतोड़ भूमि', 'चितवनक शिकार', 'चौरस खेतक चौरस उपज', 'समयसँ पहिने चेत किसान', 'भौक', 'गामक आशा टुटि गेल' तथा 'पसेनाक मोल'।

'चुनौती' संग्रहक पहिल रचनाक शीर्षक सेहो अछि आ पोथीक नाम सेहो। हम बुझि सकै छी जे उक्त काव्य संग्रहक प्रतिनिधि काव्य आकि केन्द्रीय काव्य 'चुनौती' भेल। श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजीक विषयमे कतोक विद्वान कहलैन अछि जे मण्डलजी जीवनक कथाकार छैथ, मण्डलजी उपन्यासकार छैथ। मुदा जखन हुनक पद्य रचनासभकेँ देखब तँ सहजे अहाँक मन मानि जाएत जे मण्डलजी ने मात्र जीवनक कथाकार आकि उपन्यासकार छैथ बल्कि ओ जीवनक रचनाकार छैथ। जीवनक अनुभव जइ तरहेँ मण्डलजी केने छैथ आ अपन अनुभवकेँ जइ तरहेँ अपना रचनामे समाहित करै छैथ, ई अपने-आपमे अद्वितीय अछि। से केतेको विद्वज्जन अपन वानगीमे व्यक्त केलैन अछि। 'चुनौती' शीर्षक मध्य सेहो जीवनेक बात करैत मण्डली कहै छैथ-

"सभ दिनसँ होइते एलैए
सभ दिन होइतो रहतै।

सभदिना जिनगी जीबैले

अपन चुनौती दइते रहतै।

अपन चुनौती...।"

सभदिना जीवनक अप्पन महत्व अछि। एहेन सभ दिनसँ होइत आएल अछि। तेतबे नहि, स्थिति-परिस्थिति सेहो बनिते रहत। किएक तँ परिस्थिति मात्र प्रकृतिक बनौल नहि रहैत अछि। मानव निर्मित सेहो होइत अछि-

"सभ जुग जोग जोगिया

स्थिति-परिस्थिति गढ़िते रहतै।

सम-विषम, विषम-सम बीच

अनुकूल-प्रतिकूल बनेबैत रहतै।

अनुकूल-प्रतिकूल...।"

मुदा घबराइ नहि, किएक तँ अनुकूल-प्रतिकूलक बीच अवसरि सेहो नुकाएल रहैत अछि। मुदा ओ प्राप्त होइए संघर्ष केनिहारेकेँ-

"अनुकूल-प्रतिकूल बनैक पाछू

उठि जिनगी जीवन देखै छै।

जीवन जीव जीन बनैले

संघर्ष जिनगी करए पड़ै छै।

संघर्ष जिनगी...।"

मनुक्खकेँ जीवन भरि संघर्ष करए पड़ै छै। विभिन्न प्रकारक संघर्षसँ मनुक्खकेँ अपना जीवनमे भेँट होइ छै। किएक तँ अनुकूल परिस्थितिक संग-संग प्रतिकूल परिस्थिति सेहो अबैत-जाइत रहैए-

"सभदिने अनुकूल-प्रतिकूल

रस्सा-कस्सी करैत एलैए।

रस्से-कस्सीटा किए

रग्गड़-घसो करैत एलैए।

रग्गड़-घसो...।”

जँ से नहि, तखन एना किए होइए-

“कहियो दिवा निशा दाबि-दाबि

तँ कहियो छाती फाड़ि निशा कहैए ।

भलेँ जाठि जठिया जेठ

तँए कि निशाकर पाछू हटैए।

तँए कि निशाकर...।”

देखियौ, कवि आगाँ की कहै छैथ आ केतेक विश्वासक संग कहै छैथ-

“राति-दिन एकबट्ट बटिया

दिन-राति नाओं धड़ैत रहैए।

कहियो विषुवत रेख मध्य

तँ कहियो मकर कहबैत रहैए।

तँ कहियो मकर...।”

भौगोलिक उदाहरण दैत मण्डलजी अपन वानगीकेँ आगाँ बढ़बैत कवि जकाँ नहि अनुभवी जकाँ कहलैन अछि-

“रीत-परिवर्तन होइत-होइत

कर्क सेहो पाशा बदलैए।

माघक हाड़-जाड़केँ

दण्ड काल हँसि हँसि कहैए

दण्ड-काल हँसि हँसि...।”

‘चुनौती’क दोसर रचनाक शीर्षक अछि ‘मानव गुण’। कहल गेल अछि जे मनुक्खमे जाधैर गुण नहि अबैए ताधैर ओ मनुक्खसँ एक डेग पाछू रहैए। मुदा ईहो कहलैन अछि गुण अबिते जहिना फल-फूल अपन-अपन नाओं धड़बए

लगैए तहिना मनुक्खक बीच सेहो अछि-

"जाधैर फूल महक नै पाबे
कोढ़ी-वाती कहबैत रहैए।
तहिना ने मानवोक बीच मानव
मानव मनुख कहबैत रहैए।"

जहिना सात तल पतालक अछि तहिना अकासोक अछि आ तहिना मनुक्खक बीच सेहो अछि। जीवनक स्तर होइए, जिनगीक स्तर होइए। तखने तँ मानव बीच चौदह कलाक चरचा अछि-

"गुण अनेक बीच आठ
पौरुष गुण कहबैत रहैए।
पबिते पेब गुणवान बनि
पुरुष महापुरुष कहबए लगैए।"

मनुक्खमे जहिना-जहिना गुणक विकास होइए तहिना-तहिना जीवनक स्तर सेहो ऊपर उठैत जाइए-

"जहिना-जहिना गुण बढ़ै छै
तहिना पुरुखपन सेहो कहै छै।
ऐबते पौरुष तन मनुजमे
महापौरुष सिर चढ़ि सुनैए।
तीन गुण आदिए सँ आबि
सत्-रज-तम कहबैत एलैए।
तामस-प्रीति मनुखेटामे नहि
पशु-पक्षी सेहो पकड़ैत एलैए।"

जहिना-जहिना पशु-पक्षी एक-दोसरसँ हटि-सटि कामी-लोभीक रूप धड़ैए, तहिना मनुक्खोक बीच अछि। द्रष्टव्य अछि-

“जहिना-जहिना पशु-पक्षी बीच
गुण तीनू गुणगान करैए।
एक-दोसरसँ हटि-सटि
कामी-लोभीक रूप धड़ैए।
बिना किछु कहनौं-सुननौं
बीख बमन सदैत करैए।
गहुमन चालि बुझि देखि
मनुष्यत्व डरए लगैए।”

मुदा मनुक्खमे तेकर उपाय करैक लूरि सेहो छै-

“मुदा टोननिहार मनुखो होइ छै
उपाय तेकर सोचए लगैए।
मंत्र-जौड़ पकैड़-पकैड़
चित्ती-कौड़ी भाँजए लगैए।
भजिते चित्ती-कौड़ी धरती
गरुड़ चालि पकड़ए लगैए।
चारू दिशा नजैर दौगा
अकास बीच उड़ए लगैए।”

जहिना बरही काठ खोदि उक्खैर, ढोलक केर कठरा बनबैए, तहिना ने कठखोधियो खोदि-खोदि कऽ हीर काटि धोधड़ि बनबैए-

“रक्षित सुरक्षित भवन बीच
चैनक जिनगी बास करैए।
निच्चाँ धरतीक बोहैर देखि-देखि
सुख-सेजि विश्राम करैए।
ने डर पानि ओ पाथर

हवो ने किछु कए सकैए।
धरती सहजहि पड़ल-सुतल
भयए किए भऽ सकैए।”

देखू, आगाँ की होइए-

“मुसक खुनल बील पकैड़
नाग-नागिन कहबए लगैए।
नागे तँ धरती टेकने छै
अखण्ड राज भोगए लगैए।
जेकरे बनौल घर बसै छै
तेकरे पकैड़ भोजन करै छै।
सुख-पतालक पाबि-पाबि
अकास-पताल लोक गढ़ै छै।
भोगी जोगी बनि-बनि
मंत्र सूत्र गढ़ए लगैए।
सुर्जो-चानक गति-मतिकेँ
रगैड़-रगैड़ मेटबए लगैए।” ❑

रहसा चौरी

जगदीश प्रसाद मण्डलजी 'रहसा चौरी' काव्य संग्रहमे मिथिलांचलक ओइ भूभागक चित्र प्रस्तुत केलैन अछि जे सालक छअसँ नअ-दस मास धरि पानिमे डुमल रहैए। जइमे अनाज उपजाएब असम्भव अछि। एहेन भूभाग गाम-गामक कुल जमीनक तिहाइ-चौथाइ हिस्सा छी। जइसँ स्पष्ट होइत अछि जे मिथिलांचलक तिहाइ-चौथाइ भू-भाग तेना पानिक घेरमे अछि जे ओइमे कोनो उपजाक आशा नहि, माने ने कोनो तीमने-तरकारी आ धाने-गहुम कि तेलहने-दलिहन आ ने पानियेँक माने पानियोँमे अनेको तरहक उपजाक सम्भावना अछि मुदा सेहो सभ किछु नहि। अर्थात उपजाक दृष्टिसँ ओ जमीन बेकार अछि। जखन तिहाइ-चौथाइ गामक माटि वा मिथिलांचलक माटि उपजबे ने करत तखन ओइठामक किसानक आर्थिक स्थिति बिगड़बे करत किने। यएह चीज 'रहसा चौरी' काव्यक माध्यमसँ कवि कहए चाहलैन अछि।

जगदीश प्रसाद मण्डलजी एक अनुभवी किसान छैथ। समाजक प्रति हिनक सरोकारी भावना मिथिलाक पंचदेवोपासनाक विचाराधारासँ सम्बद्ध बुझना जाइत अछि। ई चिज हिनकर जीवनक क्रिया-कलापमे सेहो देखबामे अबिते अछि। श्री गजेन्द्र ठाकुरजी लिखै छैथ-

"मैथिली भाषाक आरोह-अवरोह मिथिलाक बाहरक लोककेँ सेहो आकर्षित करैत रहल आ ओइ भाषाक आरोह-अवरोहमे समाज-संस्कृति-भाषासँ देखौल जगदीशजीक सरोकारी साहित्य मिथिलाक...।"

मण्डलजी एक अनुभवी जकाँ चीजकेँ अपना रचनामे वर्णित करै छैथ तहिना एक दार्शनिक जकाँ सर्वकल्याणकारी मार्गकेँ सेहो प्रशस्त करबाक कोशिश करै छैथ। ओ कहै छैथ जे पानिसँ डुमल धरती सेहो उत्पादित सम्पैत

भऽ सकैए मुदा तेकर कोनहुँ समुचित व्यवस्था नहि रहने बेकार भेल पड़ल अछि। द्रष्टव्य अछि-

"भीतर मिथिलाक ओ भूभाग
चौड़गर एकटा चौरी छै।
दूर-दूर धरि पसरल-पसरल
बिसवासू खेतीक भूमि नइ छै।
नअ मास पानिए गुड़गुड़ा
हिआ-हारि कनबो करैए।
माटिओक कर्मक फल तेहने
अपने बेथे चिचिआ रहल-ए।"

जखन धरतीक एहेन रूप रहत तखन धरतीवानक अर्थात् किसानक केहन गति हएत? यथार्थवादी कवि अपन दृष्टि एहने भूमि दिस नजैर देलैन अछि। सर्वविदित अछि जे मिथिलांचल एक सघन आबादीबला क्षेत्र अछि। ओना, देशक अनेको आरो-आर शहरसभ सघन आबादीबला अछिए जे ग्रामीण आबादीकेँ समेटने अछि। मुदा ग्रामीण क्षेत्र सेहो मिथिलांचल सघन आबादीबला जगह छी, जैठाम बेरोजगारी परमान चढ़ल अछि। आ से आइये नहि, सभ दिनसँ। तँए मिथिलांचलवासीकेँ पलायन करब अनिवार्य भइये गेल अछि। जँ से नहि करता तँ जीवन-यापन करब कठिन भऽ जेतैन। अही विचारकेँ कवि रेखाङ्कित केलैन अछि-

"बेरोजगारसँ देश भरल छै
बौस बिना कंगाल बनल छै।
तैबीच रोजगारे हेराएल
तमसगीर तमाशा देखि रहल छै।"

लोक निराश भऽ अपन भाग्यकेँ कोसैत हारल-थाकल भेल पड़ल अछि। पलायनवादी सोचक जे लोक छैथ, जनिक बेवहार किछु आर आ उद्देश्य किछु

आर छैन। अर्थात् जे बजै छैथ किछु आर आ करैत काल करै छैथ किछु आर, ओहन बेकती लेल कवि कहै छैथ-

“गामक माटिक जँ दशा एहेन
मिथिला राज केहेन हेतइ।
बाहरे-बाहरक सुसकारीसँ
गहुमनक बीख केना झड़तै।
विचार इमानक केकरा कहबै
खोलि देखू मातृकोष।
अपने-आप प्रश्न पुछि
विचार करू सम्हारि होश।”

वैचारिक दौड़मे सभकियो नीक्के चाहिते छी, कल्याणकारीए बजबो करै छी, मुदा दुनियाँक बीच अपन स्थिति किए एहेन अछि? इशारामे एकरे दिस नजैर घुमबए लेल कवि कहै छैथ-

“सभ छी शुभचिन्तक देशेक
सभ विचारक संग नेता की।
मुसहर बीच मूस हेराएल
धीया-पुता काल्हि खेतै की?”

आगू कहै छैथ दिशाहीन रोजगार बनल छै, रंग-बिरंगक दुनियाँ बनल छै-

“दिशाहीन रोजगार बनल छै
रंग-बिरंग दुनियाँ बनल छै।
केतौ पेन्शनधारीक रोजगार
तँ केतौ करैबला पड़ल छै।”

अपन दुख-दरद भाय जाधैर अपने नइ बुझब ताधैर ‘नीक भविष्यक नीक सोचब’कैँ पाबि केना सकब। किएक तँ निच्चाँ-ऊपर सभ बजैए-

“किसानेक देश भारत छी
कटि-मरि किसाने सभ
अँग्रेजोकेँ भगौने छी।”

बाजबो तँ बाजब छी, आ तहिना बुझबो बुझब छीहे। एक बुझैबला गारि पढ़निहारकेँ इमानदार बुझै छैथ आ दोसर गारि सुनैबलाकेँ, माने बरदास केनिहारकेँ। जखन कि बेइमान (लूटेरा) दुनू तरहक भऽ सकैए, अछियो। मुदा परिस्थितियो तँ परिस्थिति छीहे। कवि कहैत छैथ-

जरि-उजैर केते गाम
केते लोक प्राण चढ़ौलक
पैंसैठ बर्खक आजादी की
पेटोक दुख मेटोलक।

इंसानक लेल इशारा काफी। मुदा तइसँ इतर इशारोपर आरोप-प्रत्यारोप चलबे करत। खाएर जे चलत मुदा कवि अपन कवितामे यर्थाथकेँ अनबासँ बाज नहियेँ जाइ छैथ। देखू मण्डलजीक यथार्थ-

जहिना आजादीसँ पहिने
चुसलक खून राजा-रजवार।
तहिना तँ आइयो होइए
चुसैए देशी-विदेशी करखन्नादार।”

टुटैत जिनगीक बेथा घुमि पाछू देखए पड़त। सैयो कि हजारो वर्ष नहि, जड़िएसँ देखए पड़त-

“पाँच हजार बर्खक पुराण
हँसि-हँसि बाजि रहल अछि।
सुर-असुर, दानव-देवताक
ऐतिहासिक गाथा सुना रहल अछि।

लगभग पौने दू साए बर्ख पहिने
अँग्रेज आबि आसन जमौलक।”

अंगरेजकेँ भागिते ऐठामक जन-गण आजादीक साँस लेलक। खाएर, थोड़ेक आगू चलू। हजार वर्षक गाथा की कहैए। चारू दिस भजारि-भजारि, विवेकसँ पुछियौ जे निर्णय की करैए-

“स्वर्णिम इतिहासक स्वर्णकाल
ओझुके भारत छल तहियो।
निचोड़ि-निचोड़ि, तर्क-वितर्क
निर्णय निरमाबए पड़त आइयो।
निर्णय निरमाबए...।”

अहिना बीतल वर्षक विदाइमे अन्तिम सत्कारमे चिह्नित करैत चिन्ह-जानिकऽ देखू की कहै छैथ-

“अन्तिम सत्कार सुनू शिकारी
अन्तिम दिन कहै छी।
अन्तिम बात सुना-सुना
अन्तिम सत्कार करै छी।

जे कियो जैठामक धरतीपर जन्म लइए ओकर जहिना ओइठाम कर्तव्य बनै छै तहिना अधिकारो रहिते छै मुदा तइमे आदियेसँ खेल चलैत आएल अछि, माने जहिया बानर रूप छल। ओहु अवस्थामे जे बलगर बानर रहै ओ अबलाहाकेँ कहै- एना कर, ओना कर, नहि तँ देखही की होइ छौ। माने स्पष्ट अछि। गारजनीक लड़ाइमे कमजोर लोक आरो टुटैत गेल अछि। मुदा ओहो सभ किछु बुझि-सुझिकऽ कहए चाहैए-

हँसैत रहू सदैत अहाँ
हमरो तँ जीबए दिअ।
सभ किछु तँ लैए लेलौं
एतबो तँ बाजए दिअ।”

जिनगीक बेवहारिक पक्षक धरातल ओहन होइत अछि जैठाम तर्क-विर्तक कि कुतर्के-सुतर्कसँ आकि बहन्ना-बाजीएसँ झाँपब असम्भव भऽ जाइए। क्रियाक प्रतिफल ऐना जकाँ अपने झलकैत रहैत अछि। जे सभ सबहक देखबो करैए आ बुझबो करैए, भलेँ कियो केकरो कहए नहि चाहैए जे अनेरे ओइसभमे समय लगा कऽ की हएत। ओ तँ अपने डिरियाइत कहबे करैए-

“नोर पीब हृदय अहाँक
शीतल सदैत रहैए।
मनक ताप झहैर-झहैर
सगतैर तँ कहैए...।”

गलत केनिहार एक्केबेर नमहरे गलती थोड़े करैए, पहिने छोट-छोट गलती करैए, धीरे-धीरे ओ पैघ-सँ-पैघ गलती करै-जोकर बनैए। तहिना समाजक बीच जे सरोकारक हाल पतराएल ओ एक दिनमे नहि पतराएल अछि। पतराइत-पतराइत पतराएल अछि। मुदा जहिना एकटा झूठकेँ नुकबैले हजारटा झूठ बाजए पड़ैए, तहिना आइ सामाजिक समस्या सबहक हालत बनि गेल अछि। एकरा मूलमे रचनात्मक सोचक अभाव सेहो अछि। मुदा के केकरा लग बाजत सभ अपने बेथे बेथाएल अछि। कवि अपन बेथा शीर्षकमे देखू की कहै छैथ-

“पुछत के केकरा यौ भाय
अपने बेथे सभ बेथाएल।
घसा-घसा चानी बनि टलहा
चीन-पहचीन सभ हेराएल।
कोन कष्ट केकरा पकड़ने
देखनिहारो वौआएल-ए।
देखतो देखि ने पेब पबैए
देखनिहारे भँसिआइ-ए।”

मुदा तर्कक कमी अछि। एकटा होइए तर्क, दोसर होइए वितर्क तहिना कुतर्क होइए आ सुतर्क सेहो होइते अछि। रंग-बिरंगक चश्म दृष्टि सेहो अछिए मुदा परिस्थिति की एहेन नहि अछि जे जैठाम ठाढ़ भऽ कवि कहै छैथ-

“रंग-बिरंगक चश्म दृष्टि
मने-मने हेराएल-ए।”

खाएर जे अछि से तँ अछिए, आब की करी? तइले अपन अनुभवकेँ सर्व-कल्याणक दिशा दिअ पड़त, स्वीकार करए पड़त ई कवि कहै छैथ-

दिअ पड़त दृष्टि धरती
विचार मन छिड़ियाएल-ए।
तीन-दिशा तीनू चलए।
आत्मिक भौतिक ओ देवीक
जगह पाबि तीनू खेलैए।
तीनू अछि अपने लेविक।”

ऐ तरहेँ प्रस्तुत पोथीमे मैथिलीक सशक्त रचनाकार जकाँ मण्डलजी मिथिलाक माटि-पानिक वास्वतिक स्वरूपकेँ देखेबाक कोशिशमे ‘बाढ़िक सनेस’ सँ लऽ ‘ऐ पढ़बसँ मुरुखे रहितौं’ धरिक शीर्षक मध्य 40 गोट रचनाक समायोजन केने छैथ।

‘रहसा चौरी’क आमुखकार डॉ. शिव कुमार प्रसाद, विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग, एच.पी.एस. कॉलेज- निर्मली (सुपौल) कहै छैथ- “जगदीश प्रसाद मण्डलजीक सभ विधाक रचनामे मिथिलाक माटि पहिल पात्रक रूपमे अभरैत अछि। कथा, उपन्यास, नाटक, कविता आदिमे हिनक गाम, गामक माटि, गामक लोक, बाड़ी-झाड़ी, खेत-खरिहाँन, कलम-बँसबिट्टी, पाबैन-तिहार, माय, काकी, बाबी, बिधवा, सधवा, नचार इत्यादिकेँ हम सहजे देखि सकै छी। हुनक हँसी-खुशी, वियोग-व्यथा, झगड़ा-झंझट, मुड़ण-उपनैन, बिआह-दुरागमन, मरण-हरण सभ सामाजिक, पारिवारिक, आर्थिक तथा मनोवैज्ञानिक भावक अभिव्यक्ति मण्डलजीक विविध विधामे विद्यमान छैन।” ❑

कामधेनु

कामधेनु शब्दक अर्थ सर्वविदित अछिए जे ओ एक गाए थिक, जनिक अपन खास गुण छैन। कियो कहता जे कामधेनु ओहन गाए थिक जे देवतालोकनिक द्वारा समुद्र-मथन केलाक प्रतिफल अछि। तँ कियो कहता जे इच्छापूर्ति करएवाली गाएकेँ नाओं थिक कामधेनु। मुदा ऐठाम 'कामधेनु'क अर्थ मात्र एतबे अछि जे श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजी द्वारा रचित पद्य विधामे 10म कृतिक नाओं छी कामधेनु। कामधेनुक लेखन एवं प्रकाशन वर्ष 2020 अछि। ओना, 2020 इस्वीमे 'कामधेनु'क अलाबे मण्डलजी, माने जगदीश प्रसाद मण्डलजी आरो अनेको पोथीसभ लिखबो केलैन आ प्रकाशितो करौलैन। जेना, 'मन मथन' आ 'अकास गंगा' पद्यमे आ गद्यमे 'सुचिता' उपन्यासक अलाबे 'कृषियोग', 'हारल चेहरा जीतल रूप', 'रहै जोकर परिवार', 'कर्ताक रंग कर्मक संग', 'गामक सूरत बदैल गेल' आ 'अन्तिम परीक्षा' कथा संग्रहसभ सेहो 2020 इस्वीमे लिखल एवं प्रकाशित करौल पोथी सभ छिऐन। ऐठाम एकटा बात आरो अछि। ओ अछि 'सुचिता' उपन्यासक लेखन एवं प्रकाशनसँ सम्बन्धित, जेकर जिक्र जे ऊपरमे भेल अछि। सुचिताक लोकार्पण पछुाएल छल। कारण, मिथिला दर्शन पत्रिकामे ओ धारावाहिक रूपेँ प्रकाशित हएब शुरू भेल छल, जनु दू-तीन खेप प्रकाशितो भेलैन। बादमे प्रत्रिका बहराएबे बन्न भऽ गेल अछि। तँए सुचिताक लेखन/प्रकाशन वर्ष 2020 रहितो लोकार्पण 2022मे 'आगामी सगर राति दीप जरय'क मञ्चपर होबए जा रहल अछि।

प्रसंगवश उपरोक्त बात जे खुइल गेल ओ नीक्के भेल। किएकि श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजी अपन प्रत्येक रचना (गद्य)क अन्तमे लेखन-तिथि अंकित करै छैथ। खासकऽ 15 दिसम्बर 2013 इस्वीक पछाइतसँ, तँए

झाँपलो नहियेँ रहैत।

मनुक्खक परिचय ओकर कर्म आ धर्मसँ होइत अछि। धर्मक माने ई जे जे धारण कएल अछि, जे अहाँक बेवहारमे अछि। अर्थात् बेवहारिक रूपमे क्रिया-कलाप आ वैचारिक रूपमे जे धारणा, विचार, विचारधारा। मनुक्खक क्रिया आ विचारमे जेना-जेना एकरूपता आबए लगैए तेना-तेना हुनकामे कामधेनुक गुण सेहो आबए लगैए। कामधेनुपन एक गुण गाइक दूध देबाक क्रियासँ जोड़ल अछि। जखन चाही कामधेनु गाएसँ दूध प्राप्त कऽ सकै छी। एहेन गुण सभ गाएमे नहि होइत अछि। तँए, कामधेनु गाइक फराक महत्व अछि।

प्रस्तुत संग्रहक पहिल काव्यक शीर्षक सेहो 'कामधेनु' अछि। उक्त काव्यमे कवि 'कामधेनु'केँ ओहन धाम कहलैन अछि जेकरा मनुक्ख अपन मनसा वाचा आ कर्मणामे एकरूपताक बलेँ निर्माण करै छैथ-

"कामधेनु धाम ओहन धाम
धरमी-करमी सृष्टैत एलैए
करमी-धरमी बनि-बनि
कामधेनु धन पबैत एलैए
कामधेनु धन पबैत एलैए।"

जखने जिनगीमे कामधेनु गुणक प्राप्ति होइए तखने ओ सु-तंत्रक साँस लिअ लगैए-

"अबिते खुट्टा कामधेनु
सुख-सेवा हँसैत कहै छै।
जुग-जुगसँ जकड़ल जिनगी
सु-तंत्र साँस लिअ लगै छै।"

जँ मनुक्ख अपन जिम्मा नहि बुझलक तँ ओ गुणशील नहि कहौत, आ जखन ओ गुणशीले नहि भेल, तखन ओकर जिनगीकेँ के कहए जे ओकर

अपनो परिचय अपना नहि भऽ सकत-

“जिम्मा-जिम्मा सभ वृत्ति जिम्मा
सु-तंत्र जिम्मा कहाँ पबै छै।
बिनु सु-तंत्र जिम्मे मनुष्य
अप्पन परिचय कहाँ पबै छै।
अप्पन परिचय कहाँ पबै छै।”

कामधेनु धन जिनगीपर निर्भर होइत अछि। मनुक्खक क्रिया-कलाप मात्र मनुक्खेटाक परिचायक नहि, समाजक सेहो होइत अछि। मनुक्खेसँ परिवार आ परिवारेसँ गाम-समाजक निर्माण होइत अछि किने। तँए गाम-समाजक परिचय सेहो ओहीपर निर्भर अछि-

“कामधेनु धन तकै छै जिनगी
पेब जिनगी चुहुट धड़ै छै।
सभ वृत्ति वृत्ताकार रहितो
धेनुकाम धन देखए लगै छै।
गाम एक अनेक धान कहितो
अयोध्या-लंका कहबए लगै छै।
धेनुकाम छोड़ि लंक जे भागए
लंका रावण कहबए लगै छै।”

ऐ तरहेँ प्रस्तुत संग्रहक रचना आगाँ बढ़ैत गेल अछि। जइमे दोसर रचनाक शीर्षक अछि- ‘जिनगीक कुंज’। कविक कहब छैन जे दुनियाँक ऐ भवसागरमे भव आनन बनबए लगै छै-

“जिनगीक कुंज भवनमे
बिहार कुंज करए लगै छै।
दुनियाँक भवसार बीच
भव आनन बनबए लगै छै।”

आगाँ कहै छैथ-

“आनन-कानन बीच-बीच
हजार आँखि देखैत रहै छै।
सरमे-भरमे चुनि-चुनिन्दा
सागर भव भरैत रहै छै।”

बेकती मात्र अपन कर्मक मालिक अछि। जिनकर जेहेन आँखि-पाँखि ओ तेहेन बास-वृक्ष अपन बनबैत एला हेन। उक्त काव्यक ऐगला पारामे कवि यएह चीज कहए चाहलैन अछि-

“जेहेन आँखि पाँखि तेहेन
बास गाछ बनबैत रहै छै।
गाछ-पात फूल फलैन
संग मिलि जीबैत रहै छै।”

कवि कहै छैथ, जिनगीमे अफरा-तफरी ओहिना नहि बढ़ि रहल अछि, एक-दोसराक देखा-देखीसँ सेहो बढ़ि रहल अछि। बढ़ैत-बढ़ैत ओतए पहुँच गेल जेतए वर्तमानसँ हटि या तँ भूतेक चर्च करब आवश्यक बुझै छैथ या नहि तँ भविष्येक बात करए लगै छैथ-

“हलचल जिनगी हलैस-कलैश
हर-हरि चालि चलै छै।
बीर्तमान भविस कहि-सुनि
भूत-बंगला सजबै छै।
मीत यौ, भूत-बंगला सजबै छै।”

अपना गामक गाछी जहिना डेरौन होइए तहिना आन गामक पोखैर डेरौन होइए। ई तँ सबहक नजैरपर अछिए मुदा ईहो की नइ अछि जैठाम भवलोक गढ़ि-गढ़ि अपन हाथ ससारल जाइत अछि। कवि कहै छैथ-

“जहिना आनक पोखैर डरान
तहिना गाछी सेहो कहै छै।

अधसर-अधमर पोखैर सिरैज
जम-जजमान फुफकारि कहै छै।
मीत यौ, जम-जजमान फुफकारि कहै छै ।"

तैसंग ईहो तँ सबहक सोझहेमे ने अछि जे आँखिक देखलपर कम कानक सुनलपर बेसी बिसवास कऽ लइए, तखन तँ कनफेड़ हएब स्वभाविक। ओना, आँखिक देखलोहो कि सभटा सएह रहैए जे देखौल जाइए? कैरम वोर्डक गोटी जकाँ ऐ कोणक लेल ओइ कोणमे मारैबला सेहो ने छथिए। तँए कवि कहै छैथ-

"भाग बैस एक वीणा-वादिनी
बहिना बाँहि पकैड़ कहै छै।
वाम-दहिन चालि चलैन देखि
धाम-काम धड़बए लगै छै।
मीत यौ, धाम-काम धड़बए लगै छै।"

हरदी विषनाशक होइए, तँए ओकर पौधाकेँ विषनाशक पौधा कहले जाइए। मुदा अनुभवीक अनुभव कि ई नहि कहैए जे ओकरे जड़िमे विषैला फड़ सेहो फड़ि जाइए? फड़िते अछि, जइ दुनूक बीच देखैमे खाली पिअर-उज्जर रंगक भेद रहैए। ओहने भेदकेँ कवि प्रश्न बना परोसलैन अछि-

"कन-कन मणि मन-मन मइये
अन्हार केना छोड़ाइत छी।
रचि अन्हार इजोत-जोत
तखैन एना किए विसविसाइ छी।
तखैन किए विसविसाइ छी।"

जँ से नहि तखन एना किए अछि, जेना निम्नांकित पद्यमे कवि यथार्थ वर्णन करैत ओइ सत्यपर आँगुर रखै छैथ जे सबहक सोझहेमे अछि-

"घरे-घरे इजोत दीप
गाम अन्हार पड़ल छै।

घरे-घर समाज कहि-कहि
अध-मरल गाम पड़ल छै।
अध-मरल गाम पड़ल छै।
घरे-घरे इजोत दीप
गाम अन्हार पड़ल छै।”

देखियौ आगाँ की कहल गेल अछि-

“इतिहास मिथिला कहि-सुनि
पुर जनक धाम बनल छै।
वक्र आठ गीत गबिते
ज्योतिरमान जगल छै।
ज्योतिरमान जगल छै।
घरे-घर इजोत दीप
गाम अन्हार पड़ल छै।”

‘कामधेनु’क अन्य रचनासभक शीर्षक अछि- ‘सत-चित’, ‘पड़िते पएर पवन पोखैर’, ‘अहाँ किए रूसल छी’, ‘घट-घट घोंट’, ‘जहिना बारह दिन बजै छै’, ‘दुनियाँ घोड़ाएल छै निशाँमे’, ‘बहैल बहील बहिला कहै छै’, ‘हलचल जिनगी हलैस-कलैश’, ‘टकटक ताक’, ‘भीख मांगि’, ‘ बकरी खुट्टी’, ‘अमरा अँचार’, ‘घरे-घरे’, ‘बेटी किए’, ‘मनक भाव’, ‘सिरजन सिर’, ‘कलश पल्लव भरैत रहै छै’, ‘मारी-बेमारी’, ‘हिम-गिरि’, ‘भुवन भुचल’, ‘खुजिते आँखि’, ‘मुड़जन मनुहर’, ‘गोधुलि-बेल’, ‘दौड़ि-दौड़’, ‘चोट-चाट’, ‘चाइन चेन’, ‘दीनक दोख’, ‘सगर समनदर’, ‘चप-चप चपा गेलिऐ’, ‘संगे-संग’ तथा ‘आभा मण्डल’। ❑

मन मथन

'मन मथन' पद्य संग्रहक लेखन एवं प्रकाशन वर्ष 2020 ई. अछि। श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजीक पद्य संसारमे 'मन मथन' 11म स्थानपर छैन। ऐसँ पूर्व 10 गोट कविता एवं गीतक संग्रह प्रकाशित भऽ चुकल छैन।

प्रस्तुत 'मन मथन' संग्रह 2020 ई.मे पल्लवी प्रकाशन, निर्मली (सुपौल)सँ प्रकाशित अछि। अखन हम मण्डलजीक काव्य संसारक बात कए रहलौं अछि। कथा, उपन्यास, एकांकी नाटक आदि सभ विधामे जँ मण्डलजीक योदानक बात करब तँ 2020 इस्वी धरिमे हिनक साए केर करीब पुस्तक प्रकाशित भऽ चुकल रहैन।

2021 ई.मे जगदीश प्रसाद मण्डलजीकेँ 'पंगु' उपन्यास लेल साहित्य अकादेमी पुरस्कार देल गेलैन। साहित्य अकादेमीसँ पुरस्कृत भेला पछाइत सेहो दर्जनक करीब पोथी रचि लेलैन अछि। जगदीश प्रसाद मण्डलजीक निरन्तर लेखन अद्वितीय छैन। 24 भाषामे एक-एक रचनाकारकेँ साहित्य अकादेमी देल जाइए। वर्ष 2021 मे ओहनो रचनाकारकेँ देले गेलैन जनिक मात्र पाँच गोट पोथी प्रकाशित छैन। वर्ष 2021क साहित्य अकादेमी पुरस्कार विजेताक सूचीमे बहुसंख्य रचनाकारक कृति, गणनाक हिसाबे, एक-आध-दू दर्जनक मध्य छैन आ तइसँ ऊपर असमियामे श्रीमती अनुराधा शर्मा पुजारीक 26 गोट पोथी छैन, नेपालीमे श्री छविलाल उपाध्यायक 30 गोट कृति छैन, कन्नड़मे श्री डि.एस. नागभूषणक 40, मलयालममे श्री जॉर्ज केर 49 कृति प्रकाशित छैन आ मैथिलीमे श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक शताधिक पोथी प्रकाशित छैन।

सबहक रचना-संसारकेँ जँ निरन्तरताक खियालसँ देखब तँ श्री मण्डलजीक लेखनीक निरन्तरता सभसँ फराक ओ श्रेष्ठ बुझना जाएत। हिनक

पहिल रचना औपन्यासिक कृति ‘मौलाइल गाछक फूल’ छिऐन जे 2004 ईस्वीमे लिखला। 2008 इस्वी धरिक अवधिमे पाँच गोट उपन्यास, एक नाटक तथा किछु कथादि लिखि चुकल छला। ओ कहै छैथ- “मौलाइल गाछक फूल 2004 ईस्वीमे लिखल पहिल उपन्यास छी। अखन धरि पाँचटा उपन्यास आ किछु कथा, लघुकथा, नाटक सभ अछि। छपबैक जे मजबूरी बहुतो रचनाकारकेँ छैन से हमरो रहल। मुदा तइसँ लिखैक क्रम नै टुटल। ‘भैंटक लावा’ कथा सेहो दू-हजार चारिक पहिल कथा छी।”[17]

प्रस्तुत पोथीमे कुल 24 गोट पद्य रचनाक समायोजन भेल अछि। जइमे ‘संग जिनगी खेल होइत एलैए’ पहिल स्थानपर संग्रहित अछि। ‘संग जिनगी खेल होइत एलैए’मे मण्डलजी कहए चाहै छैथ जे मनुक्खक जीवनमे जे कोनो समस्या अछि तइमे 98 प्रतिशत समस्या मानव निर्मित अछि। किछुए एहेन विपत्ति अछि जे प्रकृति निर्मित रहैए। मानव जीवनक विभिन्न समस्याक जिम्माक जड़िमे जखन हमरालोकनि जाकऽ देखै छी तँ मनुक्खेक किरदानीसँ मनुक्ख ओझराएल अछि, से स्पष्ट होइए। कवि कहै छैथ जे आइये नहि, सभदिने सँ जिनगीक संग खेलबाड़ होइत एलैए-

“आइये नहि, सबदिने सबदिन
जिगनीक खेलबाड़ होइत एलैए।
केतौ जाति-जतियारे तँ केतौ
धर्म-सम्प्रदाय धड़ैत एलैए।
भेदक भेदिया भेद भेदि
दानव-मानव लुटैत एलैए।
केतौ धन धर्म कहि तँ केतौ
धन-धर्मात्मा बनैत एलैए।
इज्जतकेँ धन धर्म कहि

[17] *मौलाइल गाछक फूल, उपन्यास, जगदीश प्रसाद मण्डल, 2009, आमुख पृ.- 09*

धर्म इज्जत लुटैत एलैए।

संग जिनगी खेल होइत एलैए।”

लगातार 200 साए वर्ष धरि अपन देश गुलाम छल। गुलामी वातावरणक दीर्घ अन्तरालमे मनुक्खक विचार केना नहि प्रभावित होएत। ओ प्रभाव सामंती विचारक रूपमे अपना ऐठाम एक-एक मनुक्खकेँ प्रभावित केने आबि रहल अछि। तँए, अपन सरदारीक चाहतमे मनुक्खक मनसा वाचा आ कर्मणामे जे नमहर फाँक भऽ गेल अछि। तेकरा देखू निम्नांकित पाँतिमे कवि कोन तरहेँ इशारा केलैन अछि-

“बीचमानि बनि मनुक्ख मानव

रोड़ा-रोड़ी अँटकबैत एलैए।

धर्मसूत्र-कर्मसूत्र कहि केतौ

सूत्रसमाज बगहारि एलैए।

देह केतौ देही केतौ कहि

शरीर-शरीरी भेदैत एलैए।

गीत-गीता गाबि-गाबि

करम-धरम चितकारि एलैए।

जिनगी संग खेल होइत एलैए।”

ई दुनियाँ सभ दिनसँ बुधियार लोकक रहल अछि। अत: बनल परिवेशक जँ उत्तरदायित्वकेँ बुझए चाहब तँ स्वत: ओ लोकनि सोझा आबि जाइ छैथ जे नियामक रहला अछि। यएह चीज कवि अपन काव्यक माध्यमेँ कहए चाहै छैथ-

“रचि दुनियाँ बुधि बुधियार

नियामक दुनियाँ बनैत एलैए।

समाज सुधारक कहि केतौ

निरमाता समाज कहैत एलैए।

जे गर जेतए गर पकड़लक
गर पकैड़ गरियबैत एलैए।
भाषा-भाषीक वक्ता बनि-बनि
सुनताकैँ सुनबैत एलैए।
जिनगी संग खेलैत एलैए।”

‘संग जिनगी खेल होइत एलैए’क अन्तिम पारामे देखू कवि अपना काव्य कौशल तथा अपन विचारधाराकैँ कोन रूपमे प्रस्तुत केलैन अछि-

“असंख्य कोटि जीब जीवात्मा
दुनियाँ बीच बसैत एलैए।
डाक-डकि मानव मानवकैँ
कृपा-कृपालुक भेटैत एलैए।
अपने आँखिये सभ किछु देखै
नजैर-नजराना दैत एलैए।
मानव-दानव जानब मनकैँ
मन मानब मथैत एलैए।
खेल जिनगीक रचैत एलैए।”

‘नजैर कहाँ बदलल’ द्वितीय काव्य छी जे ‘मन मथन संग्रहमे संग्रहित अछि। संगे-संग दुनू संगी संग मिलि खेलाइत अबैए। संगे एक विचारक बीच जीवन जीबैत अबैए। संगे-संग गाए-महींसिकैँ आम वा पीपरक पातपर चलबैत ‘गइया-महींसिया’क डाकैन दैत, खेल खेलैत अबैए मुदा आगाँ चलि कऽ ओ केना बदैल कऽ एक-दोसरसँ फराक भऽ जाइए? ई प्रश्न साधारण नहि अछि, विचारणीय अछि। कवि कहै छैथ-

“जुगक-जुग जहिना परशासन
रचि-रचि इतिहास धड़ैत एलौं।

मन-मनतर मन मनुज
संग-संग दुनू संगी
गुल-गुलाम कहाइत एलौं।
संगे-संग दुनू संगी
गुल-गुलाम कहाइत एलौं।
सपनोमे कहियो ने देखल
अज-आजादी बुझि कहाँ पेलौं।
अज-आजादी...।”

हमसभ वैचारिक रूपमे गुलाम छी। हमर सबहक विचार भेद-कुभेदकेँ नहि बुझि रहल अछि। द्रष्टव्य अछि-

“दिनक दिन, रातिक राति
भेद-कुभेद बिचड़ए लगलौं।
जेहेन जेकर आँट-पेट
से तेहेन कहाइत एलौं।
गामे बीच गौंआँ बनि-बनि
सर-समाज कहाइत एलौं।
ने गौंआँरी ने समाजी
गाम बीच समाइत एलौं।”

मनुक्ख सामाजिक प्राणी छी। स्वभाविक रूपेँ मनुक्ख समाजसँ प्रभावित होइतो अछि आ समाजकेँ प्रभावित करितो अछिए। तँए ने परिवर्तनशील जीवन यात्रा मनुक्ख रहल अछि। जैठाम जेहेन समाज तैठामक तेहेन मनुक्ख आ मनुक्ख समाज रहल अछि। परिवर्तित स्वरूपमे कखनो काल एना हुअ लगैए तँ हमरो सभमे बहुत बदलाउ भेल अछि। वास्तवमे किछु बदलाउ भेलो रहिते अछि मुदा दुनियाँक मानचित्रक हिसाबे जखन देखै छी

तखन बुझि पड़ैए जे हमरा सबहक दृष्टिकोणमे बदलाउ कहाँ आएल। अही चीजकेँ कवि अपन काव्यक माध्यमसँ कहै छैथ-

"समाज-समाज बीच समाज
ले-ऊँच, ऊँच-ले बनैत एलौं।
जहिना ले-ऊँच मन फोरि
तहिना ऊँच-ले बनैत गेलौं।
घटिया घटि घटिया-घटिया
घटिया-घाट पहुँच गेलौं।
की बढ़िया की बढ़बारि
अखनो धरि कहाँ बुझि पेलौं।
अखनो धरि...।"

आगाँ आरो स्पष्ट करैत कहलैन अछि-

"जुग बदलल जमाना बदलल
विद्वान बनि मूर्ख बदलल।
मन बीच धन बदलल।
धनिक बीच गरीब बदलल।
सभ बदलल किछु ने बदलल
एक नजरिया नजैर कहाँ बदलल।
की बदलल की अदलल
बहु नजरिया नजैर कहाँ बदलल।
बहु नजरिया कहाँ बदलल।"

मनुक्खक जीवन असलमे प्रभावित होइए नीतिसँ। द्रष्टव्य अछि-

"एक नजरिया नीति सुनि

सदिखन मन फुलाइत रहैए
नीतिक रीति रीतु वसन्त
धुर-धुरखेल खेलाइत रहैए।
एहनो तँ सम्भवे-सम्भव
नजैर-नजैर पेब पकैड़िते
फूल-फड़ लग लगैए।”

ऐगला काव्य अछि ‘देखि टराटक पड़ल रहै छी’। मनुक्खक जीवनमे विकासक महत्व तँ अछिए मुदा सर्वोत्तम विकास सर्वांगिन विकासकेँ मानल गेल अछि। कोनो चीजमे अपन समाज बहुत आगू बढ़ि गेल छैथ आ कोनो चीजमे अपन समाज अखनो बहुत पछुआएल छैथ। ऐ तरहक स्थितिसँ कविकेँ कचोट होइ छैन। ओ कहै छैथ-

“आनक-आनकेँ की कहबै
अप्पन-अपने देखैत रहै छी
समाजक बीच समाज रहितो
थाह कहाँ थहि थाहि पबै छी।
कखनो समाजोसँ सम्पन्न समाज
सुरसा सन मुँह देखैत रहै छी।
कखनो कौछोसँ कपचल
बिनु मुहेँक समाज देखैत रहै छी।
देखि टराटक पड़ल रहै छी।
देखि टराटक...।”

वैचारिक रूपमे अपना ऐठाम रामायणक विचार सबहक मुँह-ठोरपर रहैए। सबहक घरमे रामायणक पाठ भलेँ हुअए वा नहि मुदा ललका कपड़ामे

बान्हल राखल जरूर अछि। आदर्श ग्रन्थक रूपमे रामायणकेँ मानितो छीहे। मुदा व्यवहारिक दौड़मे अपन-अपन भैयारीक सम्बन्ध सबहक सोझेमे अछि। खाएर जे से कवि की कहै छैथ से देखू-

“साँझ-भोर रामायण वचन
अयोध्या समाज सुनैत रहै छी
राम-लखन भैयारी सुनि
अपन भैयारी देखैत रहै छी।
धने-सम्पैत पैत्रिक पुण्य कृत्ति
भाइपन भैयारी देखैत रहै छी।
भाए-भैयारी महींसिक सिंग
सम्बन्ध भाइपन निमाहैत रहै छी।
देखि टराटक पड़ल रहै छी।
देखि टराटक...।” ❑

अकास गंगा

श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक पद्य रचनामे प्रस्तुत पोथी एकदम टटका कृति छिऐन। ऐ संग्रहमे कुल 39 गोट रचना संग्रहित अछि। ‘नजैर-नजैरमे तफरका भैया’ शीर्षक रचनासँ ऐ पोथीक आरम्भ भेल अछि आ ‘सुफल काज’ नामक रचनाक संग अन्त। मण्डलजीक दृष्टिकोणक विषयमे एक-पर-एक विद्वज्जन अपन-अपन विचार व्यक्त केलैन अछि जे ‘मण्डलजी नव दृष्टिकोण मैथिली साहित्य लेल अनुपम अछि’। प्रस्तुत संग्रहक किछु रचनाक संक्षिप्त परिचयात्मक वर्णन करबाक कोशिश कए रहल छी। यथा-

‘नजैर-नजैरमे तफरका सभ दिन होइत एलैए। कहियो नावपर गाड़ी आ कहियो नाव गाड़ीपर चढ़ैत एलैए’। सामान्य जनकण्ठ प्रचलित ऐ सत्यकेँ कवि परिवर्तन करैत प्रस्तुत काव्यक माध्यमसँ लोकक समक्ष उपस्थित केलैन अछि-

“नजैर-नजैरमे तफरका भैया
सभ दिन होइत एलैए।
कहियो नावपर गाड़ी
तँ कहियो नाव चढ़ैत एलैए।
नजैर-नजैरमे तफरका भैया
सभ दिन होइत एलैए।”

वएह गारि सुनि केकरो दुख होइ छै आ वएह गारि सुनि केकरो तकलीफ, मुदा बुधियार लोक गारि आ कुगारिक बीच हँसैत चलैत रहै छैथ-

“केकरो गारि सुगारि बनि-बनि
केकरो गारि कुगारि बनै छइ।

सुगारि-कुगारि बीच बुधियारि
बीचो-बीच हँसैत चलै छइ।
बीचो-बीच हँसैत...।"

समाज द्वारा लोककेँ स्वतंत्रता भेटबाक चाही। मुदा अखन एहेन परिवर्तन भऽ गेल अछि जे समाज बान्ह-छेक कऽ रहल अछि। आ से परिवर्तन होइत एहेन स्थितिमे पहुँचि गेल अछि जे घरे-घर सभकियो घोड़-छानमे बन्हा गेल अछि-

"जेकरा खुजल समाज कहै छी
बान्ह-छेकसँ भरल-पड़ल छइ।
बान्हो-छेक कि बान्ह-छेक जकाँ
घरे-घर घोड़छान बनल छइ।
घरे-घर घोड़छान...।"

ऐ पाँतिमे कविक परिवर्तनक स्वर देखल जा सकैए। जे विद्वान-समाजक पूजा नहि करैत अछि हुनक कोनहुँ माइन नहि। समाजक हितमे जे कार्य करत ओकरहि समाज पूजा कऽ सकैत अछि। तहिना जे गाम उजड़ल अछि, ओइ गामक कोनहुँ महत्व नहि-

"जइ समाजक गाम उजड़ल
ओइ गामक मानियेँ की
जे विद्वान समाज नइ पूजल
ओइ विद्वानक मानियेँ की?
ओइ विद्वानक मानियेँ की?
ओइ पोखरिक मानियेँ की?
ओइ पोखरिक...।"

'नवका बास'मे कवि कहै छैथ जे समाजक बीच समाज बसल अछि। मुदा ओकरा देखए लेल विचार आ बेवहारक जरूरत अछि। जाधैर ओहन

बेवहार नहि करब ताधैर ओकर दर्शन सम्भव नहि, ठीक एकर विपरीत जखन ओहन विचार-बेवहार कियो करैत अछि तँ सद्यः ओइ दृश्यक अवलोकन भऽ जाइ छै-

"समाजक बीच समाज गाम-बास
विचार-विचरण करए लगै छइ।
विचैड़-विचैड़, विचारि-विचारि
कोने-कानी देखए लगै छइ।
जहिना खेतक कोन-कान
तहिना समाजोक कोन-कान बनै छइ।
कोने-कानी, कोन-कान ताकि
सम्पन्न बास समाज बसै छइ।
सम्पन्न बास समाज बसै छइ।
बिनु बसल-बसाएल धरतीपर
नव घर बसि बास बनै छइ।"

असंख्य बेकतीसँ लोकक सम्बन्ध रहैत अछि मुदा असली संगी वएह कहबैत अछि जे जिनगीमे संग पुरैत अछि-

"जिनगीमे जे संग पुरैए
संगी वएह कहबैत चलैए।
संग ससैर, घुसैक-पुसैक संग
प्रेमी मित्र संगी कहबैए।
जिनगीमे जे संग पुरैए
संगी वएह...।"

परिवर्तनक कारणेँ एखनुक स्थिति एहेन भऽ गेल अछि जे दूध-फूलक बीच कोनहुँ भेद नहि रहि गेल अछि। फलाफल छुतहरो घरहर बनि गेल अछि-

“मिथिला मोहैन मथि मिथिला
कहि छुतहर घरहरिया।
दूध-फूल बीच भेद ने मानि
छुतहरो बनतै घरहरिया।”

निम्न पाँतिक माध्यमसँ आशुतोषकेँ उपराग देल गेल अछि जे सुख कहियो नहि भेटल, सभदिन दुखेक तरमे दबाएल रहलौं। मनुक्खक गति कहियो नहि भेटल-

“सभ दिन दुखक तर दबेलौं
सुखक सुख कहियो ने पेलौं।
चुहैट हृदय तोष पकैड़
मनुखक गति कहियो ने पेलौं।
हे आशुतोष...।”

मनमे फूल फुलाइत रहैत अछि। जहिना वसन्त ऋतुमे भोरहरबेमे मेघक रंग ललौन बनल रहै छै तहिना मनक फूल फुलाइत रहैत अछि-

“मनक फूल फुलाइत रहै छै
मनमे फूल फुलाइत रहै छै
भोरहरबे वसन्त जहिना
मेघ ललौन बनैत चलै छै।”

कवि कहै छैथ स्वार्थ आ अविश्वासक तेहेन हवा बहि रहल अछि जे सच्चा इष्ट-मित्र बिड़ले भेटि सकैत अछि-

“दुनियाँक भव भँवरमे
मित्र-इष्ट बिड़ले भेटै छै।
इष्ट, शिष्ट, अशिष्ट बनि-बिगैड़

मुकतिक तेहने मार्ग पबै छै।

जेहने शक्तिक रंग...।"

लोकक जिनगी दू तलपर चलि रहल अछि, बाहर किछु आर आ भीतर किछु आर..। ऊपरसँ खेल खेलि रहल छी आ भीतरसँ बपहारि काटि रहल छी-

"मन-मरदन करैत रहै छी

खेल खेलौना खेल देखै छी

मने-मन बपहारि कटै छी।

खेल खेलौना खेल देखै छी।"

प्रेमी पियाक लेल ई उक्ति अछि- जे चीह्न पहचीह्न सभटा उड़िया गेल हवाक झोंकमे जिनगीक सभ चीज छिड़िया गेल...।

आबो एकबेर नजैर उठा कऽ हमरा दिस ताकू-

"चीन्ह–पहचीन्ह सब उड़िया गेल

हवा झोंक पाबि सब छिड़िया गेल

आबो कनी नजैर उठा, दिअ हमरो जिया

हे यौ प्रेमी पिया...।"

मनकेँ बिसरबाक क्षमता होइ छै। हेबाक चाही। तेँ अपन प्रियजनकेँ लोक ओहिना बिसैर जाइत अछि जेना गाछक फूल डारिसँ खसलापर बिसैर जाइत अछि। तहिना हे बहिना हमर मन अहाँकेँ बिसैर गेल-

"बिसैर गेल मन तोरा

हे बहिना बिसैर गेल मन तोरा

जहिना गाछक फूल झड़ै छै

झरि-झरि खसलह तोरा

हे बहिना, बिसैर गेल मन तोरा।

हे बहिना...।"

लोक दुखसँ भागि जाइत अछि, भूखसँ भागि जाइत अछि। मुदा भरल पेट तँ विचार करबाक चाही? आ से जखन भरलो पेट विचारकेँ ताखपर राखि देबै तखन तँ..! 'आबो कनी विचारू' काव्यक माध्यमसँ कवि यएह कहै छैथ। देखू निम्न पाँतिकेँ-

"आबो कनी विचारू
भाय यौ, आबो कनी विचारू।
भुखे भगलौं, सभ जनैए
दुखे भगलौं, सभ जनैए।
भरल पेट विचारू
आबो कनी विचारू
भाय यौ...।"

वृद्धक प्रश्न अछि जे हम वृद्ध भेलौं, वृद्धसँ समृद्ध समाज बनैत अछि जेकर कल्पना कएल गेल अछि, नीक समाजसँ अर्थात् समृद्ध समाजसँ-

"वृद्ध-सँ-समृद्ध कहबए
समृद्ध समाज कल्पित छै
साज सिंगार सोल्हो कला
रीत वसन्त सूर तानि कहै छै।
बुझियो कहाँ पेलिऐ।
भाय यौ, बुझियो कहाँ पेलिऐ।
वृद्ध केना...।"

समय शान्त नहि अछि बल्कि समयमे भूचाल आबि गेल अछि, भूकम्प आबि गेल अछि आ ओइ भूकम्पक कम्पमे जिनगी बोहिया गेल अछि-

"समय केर भूचालिमे
जिनगी बोहिया गेल।

जी-वन वन जीवन बीच

बोहिआएल बाट बटिया गेल।”

भगवतीसँ लोक आशीर्वाद मांगैत अछि मुदा ऐठाम परिवर्तन ई भेल अछि जे भगवतीकेँ उपराग दैत कहैत अछि जे राति-दिन सुखल रोटी आ आलूक सन्ना-संग रोग वियाधिकेँ हमरे दिस पठबै छी-

“सुखल रोटी अल्लू सनि सानि

दिन-राति किए खुएलौं

बाँकी भगा-भगा कऽ

रोग-वियाधि पठेलौं

एना किए...।”

कियो अनके बोझ उठबैत तबाह अछि तँ कियो अपने बोझ उठबैमे अपसियाँत अछि। ध्यान रखबाक अछि जे आनक बोझ उठबैत काल अपन बोझक जुन्ना ने ससैर जाए..! ऐ भावकेँ कवि अपन ‘आनक बोझ’ शीर्षक काव्य मध्य अनुभवात्मक शैलीमे प्रस्तुत केलैन अछि-

“आनक बोझ उठाबै खातिर

अपनो बोझ भड़ैक गेलइ।

दबि-दबि, उनैर-उनैर

जुन्ने बीच ससैर गेलइ।

मीत यौ, जुन्ने बीच ससैर गेलइ।”

आजादीक पछाइत तँ आजादीकेँ सुरक्षित राखि ओकरा आरो आगू बढ़ेबाक चाही, उपाय खोजबाक चाही किन्तु ऐठाम आजादीक उमंग तेहेन चढ़ल जे घाटे-बाटे वौआ रहल अछि, छिछिया रहल अछि-

“आजादीक उमंग उमैक

घाटे-बाट छिछिया गेलौं।

सत्त-समुद्र पहाड़ बीच

डेगे-डेग वौआ गेलौं।

भाय यौ, डेगे-डेग बौआ गेलौं।

घाटे-बाट...।”

जेतए जिनगीक रस सुखा जाइत अछि, ओतए वुधि सेहो बोझिल भऽ जाइत अछि। जिनगी तँ सरस हेबक चाही जइसँ सदिखन परिवर्तित होइत आगाँ बढ़ैत रहए-

“रस-जिनगीक सोंखा गेलै।

जिनगी रस सोंखा गेलै।

जिनगीए हरा गेलै।

भाय यौ, बुधिये बोझिया गेलै।”

संसार सिर्फ आनन्द आ भोगक जगह नहि, बल्कि समर भूमि सेहो छी। जँ से नहि, तखन जिनगीमे जिनगानी केना आओत? आ जइ जिनगीमे जिनगानी नहि, ओइ जिनगीक कोन मोल रहत? कवि अही भावकेँ निम्न पाँतिमे रखलैन अछि-

“जिनगी बिनु जिनगानी वएह

कोन सुर मुहेँ गाबि पेबै।

कोन सुर मुहेँ गाबि पेबै।

जा बौआ...।

जखन धारमे पानि रहैत अछि तँ ओ अपन आकार ग्रहण करैत अछि, मुदा ऐठाम परिवर्तन ई भेल अछि जे धार सुखि गेलाक पछातियो अपन अकार-सकार धेने अछि-

“सुखाएल धार सुखा-सुखा

अकार-सकार धेने रहै छै।”

ऐ पोथीमे माने ‘अकास गंगा’ पद्य संग्रहमे मण्डलजी कुल 39 टा पद्य रचनाक समायोजन केने छैथ।

शुरूमे, जहिया साहित्य-लेखन क्षेत्रमे अपने प्रवेश केने रही तँ बरबरि ई सुनबाक अवसरि भेटैत रहए जे रचनाकार फोटोग्राफर सदृश होइ छैथ। मुदा जखन ऐ कथनपर मने-मन विचार करए लगैत रही तँ स्वत: मनमे एक प्रश्न उठि जाइ छल जे कोनो फोटोग्राफर तँ मात्र यथास्थितिकेँ देखा सकैए, ओकर कारणकेँ तँ ओ चिह्नित नहियेँ कऽ सकैए। आ भरिसक तँए प्राय: सृजित रचना दू तरहक स्थितिमे रहैए। समस्याकेँ चिह्नित करैत वा निदानक मार्गकेँ प्रशस्त करैत। मुदा जखन श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजीक रचनाक टंकन-सम्पादनक संग अध्ययन करैक अवसरि भेटल, तखन ओइ तरहक विचारमे धीरे-धीरे बदलाव आबए लगल। एकर कारण भेल हिनक रचनाक शिल्प, जइमे समस्याक संग निदानक मार्ग सेहो प्रशस्त कएल रहैए। ❑

जगदीश प्रसाद मण्डलजीक पद्य लेखन क्रम-

1. इन्द्रधनुषी अकास

ISBN : 978-93-88811-39-2

दाम : 150/- (भा.रू.)

तेसर संस्करण : 2020

रचना क्रम-

सान-धार-धारा

पपीहाक गीत

विषधरक बीख

मिथिला केहेन

मौसमक मुस्की

आशा

आँखि

मधुरस

बीआ

महजाल

बाट

डभियाएल डगर

लज्जैत

गीत-

गंग स्नान

फनकी

सभ किछु छै जालेमे

गंगा नहाइ

गोधन पूजा

माटिक फूल

झगड़ा

नजैर

कमलाधार

बाल कविता

विभूत

झूठ-साँच

नव दुनियाँ

पुरुषार्थ

सरस्वती वन्दना

भीड़-भार

सरस्वती हमर

अगहन

केना मेटत गरीबी ❑

2. राति-दिन

ISBN : 978-93-88811-40-8

दाम : 150/- (भा.रू.)

तेसर संस्करण : 2020

रचना क्रम-

सघर्ष

साँझ-भोर

समय

जिनगीक मोड़

अकलबेड़ा

धूप-छाँह

माए

साथी

घरक लोटिया बुड़ले अछि

जुग बदलल जमाना बदलल

फँसरी-

गरीबी

दबाइए रोग

मुँहक झालि

किछु सीखू किछु करू

पत्नी

चेतन चाचा

पौरुष

घोड़ मन- 1

घोड़ मन- 2

घोड़ मन-3

घोड़ मन- 4

अलकक चान

शिशवोनी

फगुआ

शील

प्रिय

अपनेपर

डायरी ❑

3. तीन जेठ एगारहम माघ

ISBN : 978-93-88811-41-5

दाम : 150/- (भा.रू.)

तेसर संस्करण : 2020

रचना क्रम-

गर-मुड़

मनक बेथा

रहल नै

पकैड़ समय

सतरंग ऐ

दुनियाँक जेहने

चढ़ि अन्हार

एक विष

पेटक ताप

जेहेन मुँह

धार संग नाह

मन मशीन

खट-मीठ

झोंकमे

पबिते पैग

हेल-मेल जाधैर

कौशल जखैन कोसल बनै छै

उमकीमे उमैक

जिनगीक कुंज

सत-चित ❑

4. सुखाएल पोखरिक जाइठ

ISBN : 978-93-88811-42-2

दाम : 150/- (भा.रू.)

तेसर संस्करण : 2020

रचना क्रम-

केकरो फूल

काज पसैर

धार बीच

फेरो हम

रंगिते काजक

चोरकट चालि

डुमा-डुमी

छाती चढ़ि

ससुरामे जा कऽ धीया

जिनगीक ताक

गोर मुँह

कतरा आम

सुखल पोखरिक

श्रोता कहि

जड़ि जंजालक

उगिते लाज

ओन्हा चालि

गिरैत घर

अना गाहिंस

सुखल पोखरिक

लत्ती जेना

पाटि

गोहि बनि

जेहेन जे

चेत चेता

अन्हर जाल

डायरीक

बरहबटू

चोटी छुबए

खेल-खेलाड़ी

ककोड़बा

सोर बनि

सेज-सिंगार

जएह लूरि

जोति हर

हर हलक ❑

5. सरिता

ISBN : 978-93-88811-43-9

दाम : 150/- (भा.रू.)

तेसर संस्करण : 2020

रचना क्रम-

परदेश जेतै

ओज ओझरी
पानि बीच
बंसी धार
जिनगी जखन
राति-दिन
तेहरौनी
गेल उमरिया
कर-करनाम
मनुख कहाँ
चान कौसिकीय
घट-घट
ओल ओड़ि
निरजन वन
हरबाह
हर हलक
सालक विदाइ
मोनि मन
सेड़ाइते
आँखि मिचौनी
अलकक चान
समाज सजल
सभ मिलि
सोच सकार
अबिते अगहन

उपजल खेत

धूल चरण

उनटन

जान विचार

चालैन-सूप

मरम देखि

वेद-भेद

भक-इजोतमे

जेठुआ गरे

निर्जन वन

छगुन्तामे पड़ल छी

सुआगत की लए

सुआगत अपनेक

वृद्ध केना

समय केर

भगवती गीत ❑

6. गीतांजलि

ISBN : 978-93-88811-44-6

दाम : 150/-

तेसर संस्करण : 2020

रचना क्रम-

हाल-बेहाल

शीला शील

रंग सियाही
दिन घटतै
उठिते आगि
छप्पर किए
गामसँ किए
बेढब रूप
संग जिनगी
सबहक जिनगी
सुन मैया गे
पकैड़ तान
भोरे कनी जगा देब
पकैड़ पग
संच-मंच रहए कहाँ दइए
ओस बनि
बाढ़िमे सभ
हेराएल-ढेराएल
मीत यौ अहींकेँ कहै छी
अजीब-अजीब
अपने ताले
पग-पग
मीत यौ
निरमोही बौआ
अपना गतिये

भजार यौ

हे बहिनी

हे बहिना, हे दीदी

सुक्खक अतृप्त

नढ़ड़ा हेल हेलै छी

अहीं कहू

चलू उचितपुर देश

कानि कलैप

बुधिये बाट

जुग-जुग

घात लगौने

देहमे नमहर ❑

7. सतबेध

ISBN : 978-93-88811-45-3

दाम : 150/-

दोसर संस्करण : 2020

रचना क्रम-

शिकारी

जीवन

जिनगीक बीच जिनगी

दिन रातिक खेल

सतबेध

किछु ने बुझै छी

गुरुत्तर

जिनगीक मोड़

मरहन बाट

कविता

घाट-बाट

चलैत पंखाक

सुमति-कुमति

हँसि हंस

खचरमणि

किसानक देश भारत

जिनगीक संगीत

सुगति

संगीत

ब्रह बाट

रस्तेमे लसका गेलिऐ

एक दस मंत्र छै

वंचित धार

पाइक मोल

हे दुनियाँ केर भाग-विधाता
कलेससँ कलैशते भैया ❑

8. चुनौती

ISBN : 978-93-88811-37-8
दाम : 100/- (भा.रू.)

पहिल संस्करण : 2019

रचना क्रम-

अखड़ा जिनगी

बिटगरहा

बाल गीत

गाछी भुताहि

अंडीक छाहैर

परदेशी

अन्हराएल छी

ओ दिन

सती-वेश्या

दूजा भाव

जीबैले लड़ए पड़ै छै

पगलखना ❑

9. रहसा चौरी

ISBN : 978-93-88811-38-5

दाम : 100/- (भा.रू.)

पहिल संस्करण : 2019

रचना क्रम-

बाढ़िक सनेस

अगो-लोढ़ा

हथियाक झटकी

रहसा चौरी

बेरोजगारी

लीढ़ी पोखैर

बकरी भेराड़ी

महगी

जरनबिछनी

नव-फल

पू-भर

चौरीक धनकटनी

किसान

टुटैत जिनगी

कविता

बुड़िबकी

गाछी भुताह

वोनक आगि

बीतल बर्खक विदाइ

संगी

बेथा

धब्बा

पितृपक्षक भोज

ठनका

झपासा

शिवचरन

चौरचनक छाँछी

भरदुतिया

फुसि

चिक्कैन माटि

झारू-बाढ़ैन

मेवाक फल

चपरासी भाय

नोत

लटुआ

एकैसम सदीक देश

मधुमाछी

जुआनी

तरंग

ऐ पढ़बसँ मुरुखे रहितौं ❑

10. कामधेनु

ISBN : 978-93-88811-46-0

दाम : 150/- (भा.रू.)

पहिल संस्करण : 2020

रचना क्रम-

कामधेनु

जिनगीक कुंज

सत-चित

पड़िते पएर पवन पोखैर

अहाँ किए रूसल छी

घट-घट घोंट

जहिना बारह दिन बजै छै
दुनियाँ घोड़ाएल छै निशाँमे
बहैल बहील बहिला कहै छै
हलचल जिनगी हलैस-कलैश
टकटक ताक
भीख मांगि (नचारी)
बकरी खुट्टी
अमरा अँचार
घरे-घरे
बेटी किए
मनक भाव
सिरजन सिर
कलश पल्लव भरैत रहै छै
मारी-बेमारी
हिम-गिरि
भुवन भुचल
खुजिते आँखि
मुड़जन मनुहर
गोधुलि-बेल
दौड़ि-दौड़
चोट-चाट
चाइन चेन
दीनक दोख
सगर समनदर

चप-चप चपा गेलिऐ

संगे-संग

आभा मण्डल ❑

11. मन मथन

ISBN : 978-93-88811-47-7

दाम : 150/- (भा.रू.)

पहिल संस्करण : 2020

रचना क्रम-

गीत

फुलबतिया

करैलाक फूल

गिरहकट्टा

पैछला गणित

कॉमन सेन्स

चास-बास

ढहल गाम

सघन वन

मानब धारण धड़ैत एलैए.. ❑

12. अकास गंगा

ISBN : 978-93-88811-48-4

दाम : 150/- (भा.रू.)

पहिल संस्करण : 2020

रचना क्रम-

नजैर-नजैरमे तफरका भैया

अपने मन ठकैए

केकरो गारि सुगारि

साँझ-भोर

समाजक बान्ह छेक

दियादी

ओइ पोखरिक मानियेँ की?

नवका बास

जिनगीमे जे

हे बहिना केनाकऽ जेबै ओइ घरिया

हे आशुतोष

मनक फूल

फूल मनक

बेकाल-काल

जेहेन जेकर

समय-साल

संग मान-समान

जेहने शक्तिक रंग रहै छै

खेल खेलौना

प्रेमी पिया

बिसैर गेल

आबो कनी विचारू

सुआगत अपनेक

वृद्ध केना

समय केर

भगवती गीत

आनक बोझ

अड़कन-मरकन

हाल-बेहाल

आजादीक उमंग

बुधिये भोतिया गेल
घर-घरा
जा बौआ
लत-लत लत्ती
पीड़ित रीति
अकार-सकार
टेनशन बीच पड़ल छी
आन्ही-अन्हर
सुफल काज ❑

Notes



नाम : उमेश मण्डल, **जन्म :** 31 दिसम्बर 1980, बेरमा, जिला- मधुबनी (बिहार), **माता-पिता :** श्रीमती रामसखी देवी, श्री जगदीश प्रसाद मण्डल, **पत्नी :** श्रीमती पूनम मण्डल, **सन्तान:** पल्लवी मण्डल, तुलसी कुमारी, मानव अनीश मण्डल, **शिक्षा :** प्रारम्भिक शिक्षा ग्रामीण माहौलमे। बी.ए. (प्रतिष्ठा) 2001 इस्वीमे, एल. एन. जनता कॉलेज- झंझारपुर (मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा) सँ, एम.ए. 2012 इस्वीमे आ राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा (NET) 2015 इस्वीमे तथा शोध-पीएच.डी.-'मैथिली साहित्यमे जगदीश प्रसाद मण्डलक रचनामे परिवर्तनक स्वर', 2021 इस्वीमे, बी.आर. अम्बेदकर बिहार विश्व विद्यालय- मुजफ्फरपुरसँ। **प्रकाशित कृति :** (1) निश्तुकी (पद्य संग्रह, 2009), (2) संस्कार गीत (मिथिलाक सभ जाति-धर्मक लोकमे प्रयुक्त मैथिली लोकगीतक सङ्कलन, 2010)। (3) 'मिथिलाक जीव-जन्तु', (4) 'मिथिलाक वनस्पति' आ (5) 'मिथिलाक जिनगी' (डिजिटल सचित्र ऑनलाइन संस्करण, 2011)। (6) विदेह मैथिली लघुकथा संग्रह, (7) विदेह मैथिली बीहनि कथा संग्रह, (8) विदेह मैथिली पद्य संग्रह, (9) विदेह मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध समालोचना, (10) विदेह मैथिली नाट्य उत्सव तथा (11) विदेह मैथिली शिशु उत्सव (संग सम्पादन कार्य, 2012 इस्वीमे)। (12) टुटैत मनक जुड़ाव (कथा संग्रह, 2018), (13) पंचदेव (100 खण्ड-ग्रन्थ, श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक बीछल कथाक सङ्कलन, 2018), (14) भारतीय मुसलमान आ भारतीयता (हिन्दीसँ मैथिलीमे अनुवाद, 2018, मूल लेखक- श्री गीतेश शर्मा), (15) दुध-पानि फराक-फराक (कथा-पाण्डुलिपि-छाया-संस्करण, 2018), (16) देवाश्रम (35 खण्ड-ग्रन्थ, विचारोत्तेजक पाम्फलेट सङ्कलन, 2019), (17) मुक्तपुरुष (शोध आलेखक संग्रह, 2021)। (18) हेन्डबुक सँ फेसबुक धरि, (19) समस्या सँ समाधान धरि, (20) निर्विकल्प आ (21) अभ्यन्तर (विचारोत्तेजक गद्यांश सङ्कलन, क्रमश: 2021-2022 इस्वी), (22) जगदीश प्रसाद मण्डलक काव्य संसार (अनुसन्धान विश्लेषण, 2022)। **संस्थापक :** पल्लवी प्रकाशन, निर्मली (सुपौल), **योगदान :** प्रसिद्ध साहित्यकार श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक 09 दर्जन पोथीक मुद्रण एवम प्रकाशनक अलावे अनेको अन्य रचनाकारक सात दर्जनसँ ऊपर ग्रन्थक अक्षर संयोजन अवैतनिक। 'सगर राति दीप जरय'क 80म, 88म, 100म (शतांक) आ 107म गोष्ठीक संयोजनक अलावे दर्जनो परिचर्चा-संगोष्ठीक आयोजन। ठाम-ठाम दर्जनो मैथिली पोथी-प्रदर्शनी। **सम्मान/पुरस्कार :** (1) विदेह युवा पुरस्कार (2013 इस्वीमे, निश्तुकी पद्य संग्रह लेल), (2) सहयोग पुरस्कार (2021 इस्वीमे, शकुन्तला-भुवनेश्वरी मैथिली-संस्कृत सम्वर्द्धन न्यास-हैदरावादसँ), **स्थायी पता:** ग्राम+पोस्ट- बेरमा, वार्ड नं.: 03,भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी, बिहार- 847410, **सम्प्रति:** तुलसी भवन, जे. एल. नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली, जिला- सुपौल, बिहार- 847452, **मोबाइल नम्बर:** +91 9931654742, (2) +91 6200635563, **ई-पत्र:** (2) +91 6200635563, **ई-पत्र:** *umeshberma@gmail.com*

ISBN: 978-93-93135-26-1





पल्लवी प्रकाशन ₹ 200/-

जे.एल.नेहरू मार्ग, तुलसी भवन
निर्मली, सुपौल, बिहार : 847452